मैं भारत हूँ

भारतीय सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनैतिक, ऐतिहासिक भावना को प्रेरित करती पत्रिका

वर्ष-१६, अंक-०२ मई २०२६ मुम्बई सम्पादक-बिजय कुमार जैन पृष्ठ ३६ मूल्य १००.०० रूपए

बुलढाणा
महाराष्ट्र

बुलढाणा के इतिहास प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाएं

BULDANA URBAN
COOP. CREDIT SOCIETY

Gold/Silver Loan, Personal Loan, RTGS/NEFT/DD

Sahakar Setu, Hutatma Gore Path, Buldhana, Maharashtra, Bharat- 443001
Email: itbucs@rediffmail.com, Phone: 07262-242705

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

पत्रिका द्वारा होने वाली आय भारतीय भाषायी संस्कृति संवर्धन व हिंदी बनें राष्ट्रभाषा अभियान की सफलता पर खर्च किया जा रहा है

जरूर देखें : http://www.mainbharathun.co.in

भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए INDIA नहीं

पधारो म्हारे देश
पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा
मेरा राजस्थान
सम्पादक : बिजय कुमार जैन
राजस्थानियों के विचारों के साथ समस्त राजस्थान समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका
मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
राजस्थान का इतिहास पहुँचाए आपके हाथ
मात्र रु. १००/- में, प्रति महिना
सम्पादक
बिजय कुमार जैन
उपसम्पादक
संतोष जैन 'विमल'
कार्यकारी सम्पादक
अनुपमा शर्मा (दाधीच)
पंजीकृत कार्यालय
बी-२१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत -४०० ०५९
दूरध्वनि: ०२२-४०१५ ८०९४ अणुडाक: mailgaylordgroup@gmail.com
भारत का एक राज्य राजस्थान का एक जिला
1 प्रति ₹ 100/- जालोर 1 प्रति ₹ 100/-
के इतिहास की प्रति मंगवाने के लिए
संपर्क करें:- 022-28509999
विशेष छूट
विज्ञापन देने पर पूरे साल 'मेरा राजस्थान' पत्रिका मुफ्त
वार्षिक शुल्क १२००/-
आजीवन शुल्क ११,१११/-
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
Remove 'INDIA' Name From The Constitution

जय भारत! जय पश्चिम बंगाल! जय गौमाता!

भारत सरकार द्वारा पंजीकृत क्र. U80300MH2021NPL369101

12A Reg No. AAPCM0514R25MB01 / 80G Reg No. AAPCM0514R25MB02 / CSR Reg No. CSR00101842

Supported By

Rajasthan Foundation
Kolkata Chapter

मैं भारत हूँ फाउंडेशन

भारतीय संस्कृति की ओर अग्रसर

द्वारा आयोजित

28th JUNE 2026

AT Kolkata

We Meet at DHONO DHANYO Auditorium, Alipore

From 11A.M.

Motivated By

भारतीय सांस्कृतिक समागम

भारत का एक राज्य पश्चिम बंगाल की राजधानी 'कोलकात्ता' में स्थापित
'धनोधान्य' अलीपुर सभागार में २८ जून २०२६ रविवार को
भव्यतिभव्य भारतीय सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन

भव्यतिभव्य, सांस्कृतिक,
ऐतिहासिक कार्यक्रम के साथ
B2B का आयोजन
नृत्य, गीत, संगीत के साथ
भारतीय व्यंजन का भी रहेगा संगम

अंतराष्ट्रीय पदाधिकारी

राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय महामंत्री	राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष	राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष	राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	राष्ट्रीय सांस्कृतिक निर्देशक
बिजय कुमार जैन, मुंबई	शोभा सादानी, कोलकाता	डॉ. गोविंद माहेश्वरी, कोटा	निशा लड्ढा, कोलकाता	सुशीला पुगलिया, कोलकाता	दिलीप सेन, मुंबई
मो. 9322307908	मो. 8910628944	मो. 9414183919	मो. 9830224300	मो. 8617203712	मो. 93228 66476
राष्ट्रीय सांस्कृतिक मंत्री	**राष्ट्रीय सांस्कृतिक मंत्री**	**राष्ट्रीय उपाध्यक्ष**	**संगठन मंत्री**	**अंतर्राष्ट्रीय संयोजक**	**अंतर्राष्ट्रीय संयोजक**
रवि जैन, मुंबई	वर्षा मूँधड़ा, कोलकाता	मंजू अग्रवाल, पुणे	अनुपमा शर्मा (दाधीच), मुंबई	अरूण मूँधड़ा, हॉस्टन, अमेरिका	किशोर जैन, लंदन, यूके
मो. 81088435715	मो. 9874272916	मो. 8806751782	मो. 9702205252	मो. 01(919)610-7106	मो. 044 (770) 3827595

'एक राष्ट्र-एक नाम 'BHARAT'

प्रवेश निशुल्क

गौमाता बनें राष्ट्रमाता

ऐतिहासिक स्थलों और आध्यात्मिक महत्व के लिए प्रसिद्ध बुलढाणा के इतिहास प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाएं

Dr. Suresh . Chhajed
Mob. 9822229327
M.D. (Medicine)
Consulting Physician

आशीर्वाद मल्टीस्पेशालिटी हॉस्पिटल
AMH एक पाऊल उत्तम आरोग्यासाठी
Ashirwad Multispeciality Hospital

चिकित्सा विभाग:
डॉ. नितेश एस. छाजेड
एम.डी. (चिकित्सा), आई.डी.सी.सी.एम.
परामर्शदाता चिकित्सक और
गहन चिकित्सा विशेषज्ञ

डॉ. सुरेश एम. छाजेड
एम.डी. (चिकित्सा)
परामर्शदाता चिकित्सक

नेत्र रोग विभाग:
डॉ. शैलेश एस. छाजेड
एम.एस. (नेत्र रोग)
एफ.जी.ओ. नेत्र रोग विशेषज्ञ

नाम पंजीकरण हेतु संपर्क करें:
०७२६२-२४२२२७
७२१८२४२२२७, ७२१८६५५५४४
आपातकालीन नंबर:
८३०८३०००२९
०७२६२-२४८०३७

Ashirwad Hospital Campus, Near Garde Hall, Buldana, Maharashtra,
Bharat- 443001 Email: drsureshchhajed@gmail.com

‘मैं भारत हूँ’ पत्रिका का आगामी विशेषांक

भारत का एक राज्य महाराष्ट्र का एक और जिला ‘नंदुरबार’

जून २०२६

नंदुरबार का इतिहास प्राचीन काल से ही बेहद समृद्ध और बहुआयामी रहा है, जिसे ऐतिहासिक रूप से राजा नंदराज के नाम पर 'नंदनगरी' और प्राचीन काल में ‘रसिका’ के नाम से जाना जाता था, यह क्षेत्र महाराष्ट्र के उत्तर-पश्चिमी कोने में स्थित है और मुख्य रूप से एक समृद्ध आदिवासी सांस्कृतिक विरासत और स्वतंत्रता संग्राम के ऐतिहासिक योगदान के लिए प्रसिद्ध है। और भी बहुत कुछ अगले अंक में......

आइये हम सभी ‘जय भारत’ से अपने सुधिजनों का अभिवादन करें। जय भारत!

१७ वें वर्ष में प्रवेश
मैं भारत हूँ
वर्ष -१६, अंक ०२, मई २०२६
वार्षिक मुल्य
रु.१२००/-
१२ अंकों का

बिजय कुमार जैन
वरिष्ठ पत्रकार व सम्पादक
भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए
का आव्हान करने वाला भारत माँ का लाडला

उपसंपादक - संतोष जैन 'विमल'
कार्यकारी सम्पादक - अनुपमा शर्मा (दाधीच)
मो: 9702205252
डॉ. अल्पना गंगवाल जैन
मो: 9369253113

● 'मैं भारत हूँ' में प्रकाशित लेखों/ कविताओं/समाचारों/ विज्ञापनों से पूर्ण सहमत होना सम्भव नहीं है।
● 'मैं भारत हूँ' से सम्बन्धित समस्त विवादों के लिये न्याय क्षेत्र अंधेरी, मुम्बई ही मान्य माना जायेगा।

सम्पादकीय मुख्य कार्यालय
गेलार्ड पब्लिकेशन्स प्रा. लि.
बी-२१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट,
मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र,
भारत - ४०० ०५९
दूरभाष :- ०२२-४०१५८०९४
अणु डाक :- mailgaylordgroup@gmail.com
UPI No:- 9322307908
अन्तरताना:- **www.mainbharathun.co.in**

कृपया विज्ञापन बिल की राशि का भुगतान
नीचे दिये गए बैंकों में जमा करा सकते हैं
HDFC Bank
Andheri East Branch
RTGS / NEFT
IFSC: HDFC 0000592.
Account No.05922320003410
State Bank Of India
(01594) Marol Mumbai Branch.
IFS Code :SBIN0001594.
Account No. 030338727406.
in the name of GAYLORD PUBLICATIONS PVT.LTD.
Payment Transfer & Inform to us on: 9322307908

सम्पादकीय ....

चलें कोलकाता-इंदौर-सिलीगुड़ी

'मैं भारत हूं फाउंडेशन' परिवार ने प्रण ले लिया है कि भारत ही नहीं विश्व में फैले 'मारवाड़ी-राजस्थानी' समाज को एकमंच पर लाना है, युवाओं को अपनी संस्कृति से अवगत कराना है। 'मारवाड़ी-राजस्थानी' युवाओं को बताना है कि हम 'मारवाड़ी-राजस्थानी' नौकरी के लिए नहीं, व्यापार करने के लिए धरती पर आए हैं, मतलब नौकरी करने वाले नहीं, नौकरी देने के लिए आए हैं और सफलता भी मिलती जा रही है।

युवाओं ने व्यापार के क्षेत्र में प्रवेश कर संघर्ष करना शुरू भी कर दिया है। भारत सरकार भी तो यही कहती है कि राजस्थानी-मारवाड़ी भारत की रीढ़ है।

हम राजस्थानी-मारवाड़ीयों को विश्वास भी है कि हम अपने कार्यों से 'भारत' का नाम विश्व में गूंजायमान करके रहेंगे और यह हो भी रहा है २८ जून को कोलकाता में, २ अगस्त को इंदौर में, १३ सितंबर को सिलीगुड़ी में, राजस्थानी-मारवाड़ी संस्कृति के साथ ऐतिहासिक कार्यक्रम होने जा रहा है। 'बुलढाणा' महाराष्ट्र का एक जिला अति सुंदर-रमणीय है तभी तो अंग्रेजों ने अपना रहवास स्थल 'बुलढाणा' को बनाया था।

'बुलढाणा' निवासियों से संपर्क हुआ तो सभी ने कहा 'बुलढाणा' की आर्थिक-सामाजिक-धार्मिक क्षेत्र के साथ प्रकृति का वातावरण भी अति सुंदर है, तभी तो हम और हमारी कई पीढ़ी 'बुलढाणा' में बसी हुई है, सचमुच अति सुंदर है 'बुलढाणा'।

भारत को केवल भारत ही बोला जाए, INDIA नहीं, अभियान व 'गौमाता बनें राष्ट्रमाता' अभियान सफलता की ओर अग्रसर है, साथ मिलते जा रहा है, कारवां बढ़ता जा रहा है, सफलता मिलकर ही रहेगी, बस समय का इंतजार है।

जय भारत! जय गौ माता!

SBI BANK
for payment

HDFC BANK
for payment

आपका अपना
बिजय कुमार जैन
वरिष्ठ पत्रकार व सम्पादक
हिंदी सेवी-पर्यावरण प्रेमी
भारत को केवल भारत कहा जाए
का आव्हान करने वाला एक भारतीय

आइये हम सभी 'जय भारत' से अपने सुधिजनों का अभिवादन करें। जय भारत!

भारत का एक राज्य महाराष्ट्र का एक और जिला

बुलढाणा

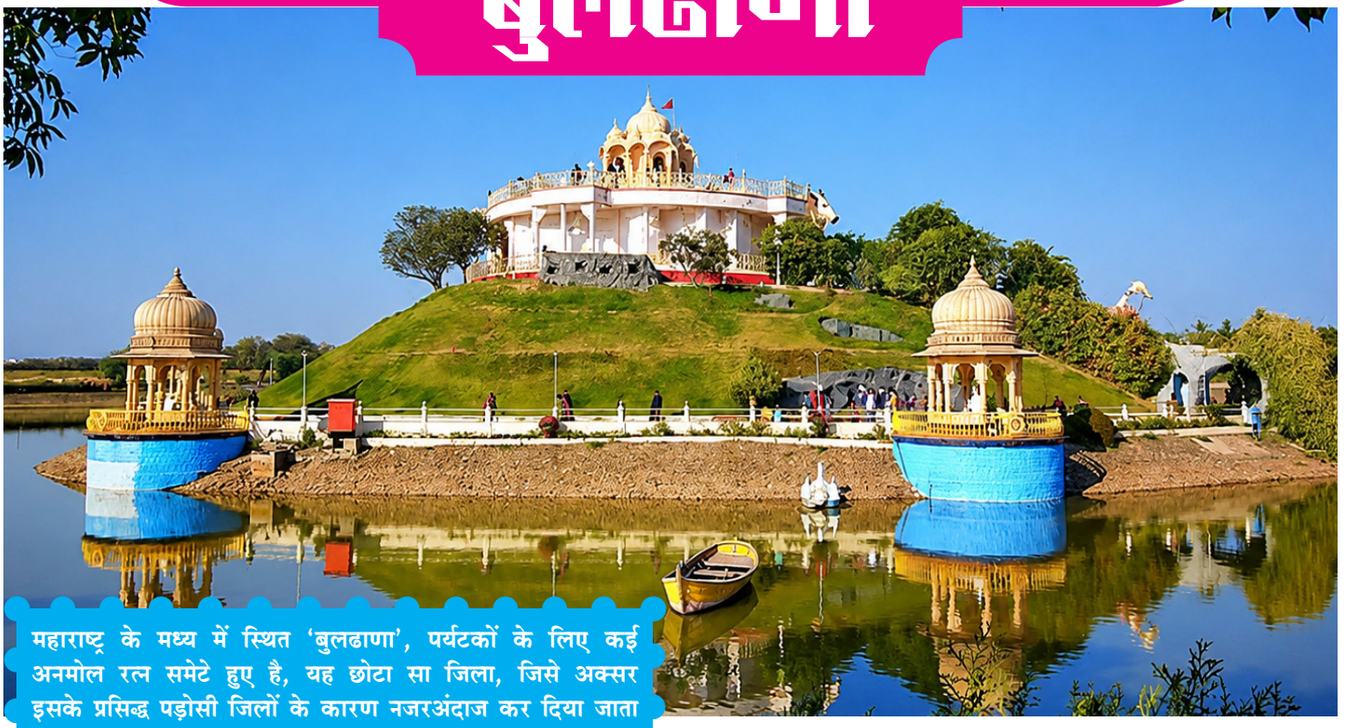

महाराष्ट्र के मध्य में स्थित 'बुलढाणा', पर्यटकों के लिए कई अनमोल रत्न समेटे हुए है, यह छोटा सा जिला, जिसे अक्सर इसके प्रसिद्ध पड़ोसी जिलों के कारण नजरअंदाज कर दिया जाता है, इतिहास, संस्कृति और प्राकृतिक सुंदरता का ऐसा संगम प्रस्तुत करता है कि यहाँ आने वाला हर व्यक्ति मंत्रमुग्ध हो जाता है, जब आप 'बुलढाणा' की सैर शुरू करेंगे तो आपको एहसास होगा कि यह सिर्फ एक जगह नहीं है, यह एक ऐसी यात्रा है जो आपको महाराष्ट्र की असलियत से परिचय कराएगी।

लोगों का मानना है कि 'बुलढाणा' नाम 'भील थाना' से आया है, जिसका अर्थ है कि वह स्थान जहाँ 'भील' जनजाति रहती थी, यह जिला और बरार प्रांत विदर्भ राज्य का हिस्सा हुआ करता था, जिसका उल्लेख महाभारत में मिलता है। समय-समय पर कई राजवंशों ने इस पर शासन किया, जैसे मौर्य, सातवाहन, वाकातक, चालुक्य, राष्ट्रकूट और यादव। १४वीं शताब्दी में अलाउद्दीन खिलजी द्वारा विजय प्राप्त करने के बाद मुसलमानों ने इस पर नियंत्रण कर लिया, इसके बाद यह बहमनी सल्तनत में शामिल हो गया और बाद में १५७२ में, निज़ाम शाही सल्तनत का हिस्सा बन गया। मुगल साम्राज्य को १५९५ में 'बरार' प्राप्त हुआ, जब मुगल शक्ति कमजोर हुई, तो हैदराबाद के आसफ प्रथम निज़ाम ने १७२४ में इस पर कब्जा कर लिया। अंग्रेजों को १८५३ में 'बुलढाणा' प्राप्त हुआ और ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने इसका संचालन किया, १९०३ में निज़ाम ने इसे अंग्रेजों को पट्टे पर दे दिया। 'बुलढाणा' १९५० में मध्य प्रदेश में शामिल हुआ। १९६० में जब 'महाराष्ट्र' का गठन हुआ, तो यह महाराष्ट्र राज्य का हिस्सा बन गया।

बुलढाणा जिले का भूगोल

भौगोलिक दृष्टि से, बुलढाणा जिला विदर्भ के पश्चिमी क्षेत्र में स्थित है, जिसके उत्तर में जलगाँव और अकोला जिले, पश्चिम में जालना और दक्षिण में वाशिम जिले हैं। जिले का क्षेत्रफल लगभग ९,६४४ वर्ग किलोमीटर है और यह मुख्य रूप से पहाड़ी क्षेत्र है, जिसकी उत्तरी सीमा पर सतपुड़ा पर्वतमाला

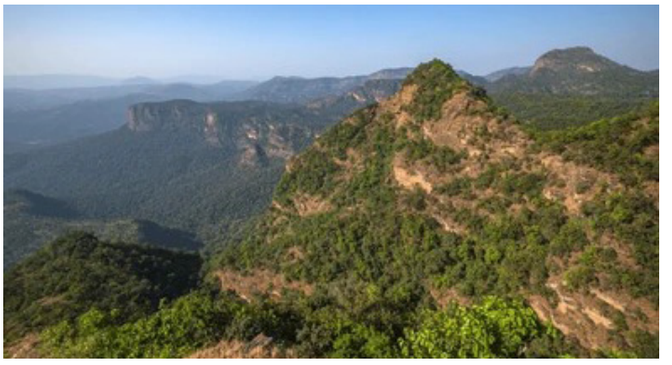

फैली हुई है। यह क्षेत्र उपजाऊ मैदानों और ऊबड़-खाबड़ भूभागों का मिश्रण है, और पूर्णा और पेंगांगा नदियाँ यहाँ के प्रमुख जल स्रोत हैं। बुलढाणा की जलवायु उष्णकटिबंधीय है, जिसमें गर्मियाँ गर्म, मानसून मध्यम और सर्दियाँ ठंडी होती हैं। औसत वार्षिक वर्षा ७०० से १,००० मिमी के बीच होती है, जो जिले की कृषि अर्थव्यवस्था में योगदान देती है। **शेष पृष्ठ ७ पर...**

आइये हम सभी 'जय भारत' से अपने सुधिजनों का अभिवादन करें। जय भारत!

पृष्ठ ६ से...

बुलढाणा जिले का सांस्कृतिक महत्व

बुलढाणा जिला सांस्कृतिक प्रभावों का संगम है, जो महाराष्ट्र की विविध विरासत को दर्शाता है। यह जिला अपने पारंपरिक त्योहारों, लोक संगीत और नृत्य शैलियों के लिए प्रसिद्ध है, जो स्थानीय लोगों के रीति-रिवाजों और मान्यताओं में गहराई से समाहित हैं। गणेश चतुर्थी, दिवाली और मकर संक्रांति पूरे जिले में बड़े उत्साह के साथ मनाए जाते हैं। यहाँ की स्थानीय बोली मराठी है और लोग अपने गर्मजोशी भरे आतिथ्य के लिए जाने जाते हैं। जिले में कला और शिल्प की समृद्ध परंपरा भी है, जिसमें वस्त्र बुनाई, मिट्टी के बर्तन बनाना और धातु शिल्प शामिल हैं। बुलढाणा की सांस्कृतिक प्रथाएं यहाँ के निवासियों की कृषि प्रधान जीवनशैली से गहराई से जुड़ी हुई हैं, और कई त्योहार और अनुष्ठान कृषि कैलेंडर के इर्द-गिर्द केंद्रित हैं।

पारंपरिक त्योहार

प्राचीन व्यापार मार्ग

बुलढाणा, जो ऐतिहासिक रूप से बरार का हिस्सा था, प्राचीन दक्षिणपथ मार्ग से जुड़े महत्वपूर्ण आंतरिक व्यापार गलियारों पर स्थित था। यह क्षेत्र कभी विदर्भ साम्राज्य का हिस्सा था, जिसका उल्लेख महाभारत जैसे प्रारंभिक साहित्यिक स्रोतों में मिलता है।

विदर्भ क्षेत्र में स्थित पुरातात्विक स्थलों से, जहाँ बुलढाणा जिला स्थित है, प्रारंभिक व्यापार नेटवर्क और मार्गों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त हुई है। इनमें से, पूर्णा नदी बेसिन में स्थित भोन गाँव, ऐसे संबंधों के प्रमाण प्रस्तुत करता है। विशेष रूप से, भास्कर देवतारे (२००७) ने भोन को ' दक्षिणपथ के व्यापार मार्ग पर स्थित ' बताया है, जो वस्तुओं और धार्मिक प्रतीकों के परिवहन के लिए उपयोग किए जाने वाले व्यापक मार्ग तंत्र में इसकी स्थिति को दर्शाता है। इसके अतिरिक्त, भोन में पुरातात्विक उत्खनन में एक स्तूप के पास टेराकोटा की कलाकृतियाँ मिली हैं , जिनमें बौद्ध त्रिकाय परंपरा से संबंधित आकृतियाँ और रूपांकन शामिल हैं। इस स्थल पर बौद्ध प्रतीकों की उपस्थिति भारतीय उपमहाद्वीप में देखी जाने वाली उस प्रवृत्ति को दर्शाती है, जहाँ व्यापार मार्गों ने अक्सर धार्मिक स्मारकों की स्थापना में सहायता की और बौद्ध प्रथाओं के प्रसार में योगदान दिया।

कृषि उत्पन्न बाजार समिती खामगांव

इस क्षेत्र के व्यापारिक इतिहास से जुड़ा एक अन्य महत्वपूर्ण स्थान खामगाँव है , जिसने मध्यकाल में प्रमुखता प्राप्त की। ऐतिहासिक विवरणों से पता चलता है कि यह मलकापुर-बालापुर गलियारे पर स्थित था और एक स्थानीय बाजार केंद्र के रूप में कार्य करता था। यह विशेष रूप से अपने चांदी के व्यापार के लिए प्रसिद्ध था और यहाँ तक कि यह एक किलेबंद शहर भी था जिसमें द्वार और दीवारें थीं, जिनमें से कुछ आज भी मौजूद हैं (अधिक जानकारी के लिए सांस्कृतिक स्थल अध्याय देखें)।

परिवहन के साधन

ट्रेन और रेल प्रणालियाँ

बुलढाणा जिले का रेलवे नेटवर्क मध्य रेलवे के भुसावल डिवीजन का हिस्सा है । २०२४ तक, जिले में बारह रेलवे स्टेशन थे, जिनमें मलकापुर और शेगांव प्रमुख थे । हावड़ा-नागपुर-मुंबई मुख्य लाइन पर स्थित मलकापुर स्टेशन, जिले को पूर्वी और पश्चिमी भारत के प्रमुख शहरों से जोड़ता है। भुसावल-नागपुर खंड पर स्थित शेगांव स्टेशन, प्रसिद्ध गजानन महाराज मंदिर के दर्शन करने वाले यात्रियों के लिए एक महत्वपूर्ण पड़ाव है। गौरतलब है कि दोनों स्टेशनों को यात्री सुविधाओं और स्वच्छता मानकों के लिए आईएसओ प्रमाणन प्राप्त है।

ऐतिहासिक स्थलों और आध्यात्मिक महत्व के लिए
प्रसिद्ध बुलढाणा के इतिहास प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाएं

प्रोप्रा. अशोक अग्रवाल
मो : ९४०३०५७३२४, ७७४३९५१९०१
महाराजा अग्रसेन रिसॉर्ट
शुद्ध शाकाहारी गार्डन रेस्टॉरंट ॲन्ड लॉजींग
✶ गेट टुगेदर ✶ सभा सम्मेलन ✶ स्वागत समारोह ✶ ट्रेनिंग प्रोग्राम
✶ प्रदर्शनी ✶ विवाह समारोह ✶ बर्थडे पार्टी ✶ व्यवसायीक मिटींग
✶ वॉटर फॉल ✶ रेन डान्स ✶ स्विमींग पुल ✶ गेम झोन
मैरिज लॉन, AC रुम- ३४, बैंक्विट हॉल-४, वेटींग हॉल-३ उपलब्ध
maharajaagrasenresort@gmail.com
एम.आय.डी.सी.प्लॉट नं.पी.- ३८ जालना रोड, चिखली,
बुलडाणा, महाराष्ट्र, भारत- ४४३११२

बुलढाणा के गौरव श्री. राधेश्यामजी चांडक

बुलढाणा की पहचान राधेश्याम देवकिसन चांडक जी आज को आज किसी पहचान की जरूरत नहीं है उनका नाम और व्यक्तित्व ही अपने आप में काफी है। राजस्थान स्थित फलोदी के निवासी राधेश्याम जी का जन्म २ अक्टूबर १९५१ को बुलढाणा में संपन्न हुआ। आप पेशे से किसान है, पर आज बुलढाणा की कई संस्थानों में विशेष पदों पर कार्यरत है। बुलढाणा जिला नागरी व पगारदार सेवक सहकारी पतसंस्था फॅडरेशन, बुलढाणा अर्बन को-ऑप. क्रेडीट सोसायटी, बुलढाणा अर्बन को-ऑप. कंज्यूमर स्टोअर्स, श्री. संभाजी राजे शिक्षण संस्था, डोंगरखंडाळा, श्री. अंबादेवी संस्थान तारापूर, ता. मोताळा, जि. बुलढाणा, बुलढाणा अर्बन चॅरिटेबल सोसायटी, महाराष्ट्र राज्य नागरी सहकारी पतसंस्था फेडरेशन म. मुंबई के अध्यक्ष पद पर कार्यरत हैं।

भाईजी की सेवाओं का वास्तविक प्रतिफल तो उनका आत्मसंतोष ही है, लेकिन उनकी सेवा ने प्रत्यक्ष रूप से उन्हें सम्मानित भी करवाया जबकि उन्होंने इसकी उपेक्षा कभी नहीं की। महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री पृथ्वीराज चव्हाण के हाथों 'जीवन गौरव अवार्ड' से सम्मानित, इसके साथ ही भाईजी पद्मश्री स्व. विट्ठलराव विरवे पाटिल महाराष्ट्र को-ऑपरेटिव एग्रो इनोवेशन अवार्ड-२००१, पद्मश्री डॉ माणिकभाई देसाई नेशनल सर्विस अवार्ड-२००२, सहकार सेवाश्री अवार्ड-२००४, विशेष समाजसेवा के लिए 'जागृति अवार्ड', शिक्षा आर्थिक विकास, समाजसेवा, संस्कृति व उद्योग कार्य के लिए 'जानिव – २००५ अवार्ड', स्वामी स्वरूपानंद संस्था के 'सहकार तपस्या अवार्ड', जीजा माता सावित्री ट्रस्ट के 'फूले साहू आंबेडकर अवार्ड – २००८', शिक्षा व समाजसेवा के लिए 'स्व. सुवालालजी वाकेकर समाजभूषण अवार्ड' छत्रपति शिवाजी बहुजन मित्र संस्था के 'छत्रपति शिवाजी बहुजन मित्र अवार्ड', 'समाज भूषण २००६ -०७' आदि सम्मानों से सम्मानित हो चुकें हैं। पद्मश्री डॉ. मणिभाई देसाई राष्ट्रसेवा पुरस्कार-२००२, देशातील उत्कृष्ठ कार्यकरणारी सर्वात मोठी पतसंस्था म्हणून नॅफकब तरफ से 'कॉपकॉन २००७', महाराष्ट्र राज्य मराठी पत्रकार संघ की तरफ से राज्यस्तरीय 'बाळशास्त्री जांभेकर' पुरस्कार, असोशिएशन ऑफ एशियन कॉन फेडरेशन ऑफ क्रेडीट युनियनस् की तरफ से 'क्युमी परफॉर्मनस् अवार्ड २०१२' आंतरराष्ट्रीय अवार्ड, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विद्यापीठ, महाराष्ट्र राज्य सहकारी पतसंस्था फेडरेशन लि. की तरफ से 'सन्मान सहकाराच्या पांडुरंगाचा', अखिल भारतीय ब्राम्हण महासंघ के ब्रम्हमित्र व अन्य कई सम्मान प्राप्त हैं।

विनम्रता से भरी सफलता की और जीवन की परिस्थितियाँ जब अनुकूल न हो तो, मन में व्यग्रता निर्माण होती है कुछ करने के लिए मन ठान लेता है तब प्रतिकूलता के क्षणों में व्यक्ति के सोचने और करने का स्तर सामान्य से हटकर विशेष हो जाता है, इन प्रतिकूल क्षणों में झेला हुआ कष्ट, चाहे कितना ही क्यों न हो, लेकिन सच्चाई यही है कि ये क्षण ही व्यक्ति को आगे बढाते हैं, जीवन की सच्चाई को सही समय पर इन्हीं क्षणो से अनुभूति प्राप्त होती हैं, एक तरफ सम्मान आगे बढने को प्रोत्साहित करता है तो दूसरी तरफ अपमान भी व्यक्ति के व्यक्तित्व को अंदर से निखारते हुए और भी मजबूत बना देता है, ऐसा मजबूत व्यक्तित्व का धनी एक नवनिर्माण करता है, जिससे परिवार-समाज-राष्ट्र समृध्दि की और अग्रसर होता है।

मा.श्री. राधेश्यामजी चांडक एक ऐसे ही व्यक्तिमत्व हैं जो इस उपरोक्त कथन को परिभाषित करते हुए 'बुलढाणा अर्बन को-ऑप. सोसायटी' के संस्थापक

अध्यक्ष तथा तज्ञ संचालक अथवा जनक है। एक सिक्के के दो पहलू, कुछ करने की चाह और जहाँ चाह वहाँ राह, सन १९८६ में केवल १२,०००/- की पूंजी और ७२ सदस्यों के साथ इस संस्था की स्थापना हुई। आज महाराष्ट्र के विदर्भ क्षेत्र बुलढाणा शहर के साथ इस संस्था की ४८० शाखाएँ भारत के महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश एवंम् आंधप्रदेश में हैं, किन्तु संस्था का कार्यक्षेत्र ८ राज्यो में (महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, राजस्थान, छत्तीसगढ, आंध्रप्रदेश, गुजरात, गोवा, अंदमान व निकोबार) में वटवृक्ष भाँति फैल चुक है। विभिन्न स्थानों पर ६५० से अधिक गोदाम तथा २० कोल्ड स्टोअरेज स्थापित है। संस्था का विस्तार इस बात की ही गवाही देता है कि संस्था ने अपने सामाजिक दायित्वों को पूरा करने के लिए जिन वचनों और वादो के साथ कदम रखा था, आज भी उन वचनों एवं वादों के प्रति सजग और सतर्क है।

समय का पहिया घूमता गया और समय के साथ ही संस्था धार्मिक, शैक्षणिक, सामाजिक क्षेत्रों में भी अपना स्थान रख चुकी है। भारतभर के अनेक प्रसिध्द धार्मिक स्थल जैसे तिरुपती बालाजी, शिर्डी, माहूर, अयोध्या, तुळजापूर, पंढरपूर इत्यादी स्थानों पर अपना भक्त निवास निर्मित किया है, जिससे भक्तों को आत्मीयता के साथ-साथ रहने की, भोजन की सुविधा प्राप्त हो सके और साथ ही भक्तगण को इन धार्मिक स्थलों पर दर्शनार्थ पर्यटन सुविधा भी बहुत कम दरों में उपलब्धकराती है।

'बुलढाणा अर्बन' संस्था एशिया में प्रथम को-ऑप. सोसायटी का स्थान रखती है। प्रगति की राह में आज इस ऊँचाई प्राप्ति **शेष पृष्ठ ९ पर...**

आइये हम सभी 'जय भारत' से अपने सुधिजनों का अभिवादन करें। जय भारत!

पृष्ठ ८ से... में संस्था के विद्यमान चेअरमन श्री.डॉ.सुकेशजी झंवर ने अपना वैज्ञानिक ज्ञान और प्रगत विचारों का आधार दिया है, उनके प्रगत विचारों से संस्था आज एक नया रुप प्राप्त कर चुकी है और कर रही है। अत्याधुनिक साधनों से संस्था का प्रत्येक कर्मचारी अवगत तो है ही, साथ ही आज संस्था का हर प्रकार का कार्य इन्हीं साधनों के द्वारा दूर बैठे व्यक्ति के साथ करने में कुशल हो गया है। वर्तमान के डिजिटल युग में संस्था भी अपने कार्य में डिजिटल हो गई, संस्था का समयानुरुप व्यक्ति, स्वचलित व्यवहार उल्लेखनीय है।

शैक्षणिक क्षेत्र में 'बुलढाणा' अर्बन द्वारा वर्ष १९९८ में बुलढाणा जिले में 'सहकार विद्या मंदिर, बुलढाणा' की आधारशिला रखी गई। पूर्णतः अंग्रेजी माध्यम की स्कूल आज बुलढाणा जिले में अपनी २२ शाखाओं के रुप में विस्तारित हो गई, ग्रामीण विद्यार्थी शिक्षित हों, संपूर्ण विश्व की भाषा अंग्रेजी से अवगत हों, इसी ध्येय के साथ आज ३२,००० विद्यार्थी सहकार विद्या मंदिर, बुलढाणा एवं उसकी शाखाओं में अध्ययन कर रहे है, एक तरफ बच्चा-बच्चा शिक्षित हो रहा है तो दुसरी तरफ अध्यापक के रुप में अनेक व्यक्ति रोजगार भी प्राप्त कर रहे हैं, इस प्रकार शिक्षा के महत्व को बढावा देते हुए बेरोजगारी पर अंकुश लगाने में संस्था अपना सहयोग दे रही है।

आज सहकार विद्या मंदिर, बुलढाणा और बुलढाणा जिले में अपनी २२ शाखाओं में विस्तारीत होकर शिक्षा क्षेत्र में ग्रामीण विद्यार्थीयों को भी शिक्षा लाभ दे रहा है। सहकार विद्या मंदिर में लगभग ३२,००० विद्यार्थी अध्ययन प्राप्ति के साथ खेल, विज्ञान प्रतियोगिताओ में एक गरिमामय प्रतिष्ठा को प्राप्त कर रहे हैं, इस विद्यालय से शिक्षा प्राप्त अनेक विद्यार्थी उच्च पदों पर अधिकारी, डॉक्टर, व्यवसायी, इंजीनिअर और देश सेवा में अपनी भूमिका निभा रहे है। सहकार विद्या मंदिर एवं कनिष्ठ महाविद्यालय, बुलढाणा के २५ वर्षों की तपस्या की यह देन फलित हो रही है। कक्षा ११ वीं और १२ वीं में आरंभ किए हुए गए, JEE, NEET, CET एवं NDA के विशेष अध्यापन वर्गों से विद्यार्थी उच्चशिक्षित हो रहे है, इसी वर्ष महाविद्यालय में कॉमर्स विभाग में CA/CS/CMA का अभ्यासक्रम भी आरंभ कर दिया है।

विद्यार्थियों को शारीरिक एवं मानसिक रुप से स्वस्थ बनाने का कार्य खेल करता है। शिक्षा क्षेत्र में अध्ययन के साथ विद्यार्थियों में खेल के प्रति भी रुचि अधिक होती है, इसी रुचि के बल पर सहकार विद्या मंदिर के अनेक विद्यार्थी स्कूल के आरंभ से तो अभी तक हॉकी, क्रिकेट, बास्केटबॉल, स्केटिंग, मलखांब, एथलेटिक स्वीमिंग, जिम्नास्टीक, फुटबॉल, हँडबॉल, चेस, कॅरम, बॅडमिंटन, बैंड इत्यादि विभिन्न प्रकार के आऊटडोर एवं इनडोर खेलों में राष्ट्रीय स्तर, राज्य स्तर, विभागीय स्तर एवं अंर्तशालेय खेलों में कीर्तिमान प्राप्त कर चुके हैं और कर रहे हैं, इन सब प्रशंसा शब्दों की गवाही देते हैं सहकार विद्या मंदिर के खेल के मैदान, सहकार विद्या मंदिर के खेल मैदान पर विद्यार्थियों के लिए विभिन्न खेलों की प्रतियोगिताएँ रखी जाती हैं। चीते की तरह दौड़ते खिलाड़ी को देख सभी की आँखें फटी की फटी रह जाती है। खेलों के लिए आवश्यक एवं पर्याप्त खेल सुविधा से युक्त है ये विभिन्न खेल के मैदान। सहकार विद्या मंदिर, बुलढाणा ने सभी खेलों के लिए एक आधुनिक शैली में सुविधायुक्त तीन-चार मंजिल का अंतरराष्ट्रीय क्रीडा संकुल बनाया है जो शिघ्र ही शुरु हो जाएगा।

विद्यार्थी केंद्रित शिक्षा के इस दालान में हर प्रकार के खेल का प्रशिक्षण निपुण प्रशिक्षकों द्वारा दिया जाता है, समय की दौड़ में जो खेल पीछे छूट गए है (गिल्ली-डंडा, भौरा, रस्सी के खेल) ऐसे खेलों से भी विद्यार्थी परिचित होकर उसमें रुचि लेते हैं। खेल क्षेत्र में यह एक संस्कृती संवर्धन के प्रशंसनीय कार्य 'सहकार विद्या मंदिर' के द्वारा समाज के सामने लाए जा रहे है। खेल, केवल शारीरिक समृध्दता ही नहीं बल्कि हमारी भारतीय संस्कृति की पहचान है। खेलों से विद्यार्थी खेल संस्कार के तहत समानता, एकता, मेल-जोल, राष्ट्रप्रेम, स्नेह, एक दूसरे की सहायता, समूह महत्व इत्यादि गुणों को अपनाते हैं। ये गुण विद्यार्थियों के लिए अच्छा खिलाड़ी, अच्छा नागरीक और सुदृढ राष्ट्र निर्माण में सहायक होते हैं। वर्तमान में खेल क्षेत्र में सहकार विद्या मंदिर, बुलढाणा एवं उसकी शाखाओं में प्रशिक्षण लेते हुए विद्यार्थी अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर स्कूल का एवं स्वयं का नाम रोशन अवश्य करेंगे इसमें कोई शक नहीं, समय ही इस सुनहरे पल का साक्षीदार बनेगा ।

संपूर्ण वर्ष विद्यालय में शिक्षा ग्रहण करने वाले विद्यार्थियों के लिए खेल के मैदानों पर प्रशिक्षण सुविधा है, परंतु ग्रीष्म अवकाश में सहकार विद्या मंदिर, बुलढाणा का खेल मैदान स्कूल बाह्य विद्यार्थियों के लिए भी खुला रहता है, अतः ग्रीष्म अवकाश का सदुपयोग हो, इस हेतु विद्यार्थियों की आयु के अनुसार भी एक महिने का निवासी / अनिवासी खेल प्रशिक्षण दिया जाता है, जिससे विभिन्न आयु के विद्यार्थियों में खेल रुचि जागृत होती है।

सहकार विद्या मंदिर, बुलढाणा प्रति वर्ष ग्रीष्म अवकाश (अप्रैल-मई) में निवासी 'कामयाब केप' का आयोजन २०-२५ दिनों का करता है, इस वर्ष २०२६ में भी इसका आयोजन १ मई २०२६ से १७ मई २०२६ तक का किया गया थ। विभिन्न प्रकार के खेल एवं आधुनिक नृत्य शैली प्रशिक्षण ही इसका आकर्षण है, साथ ही स्वस्थ जीवन हेतु योगसाधना, मिलट्री ट्रेनिंग, संस्कृत गीत, श्लोक, आध्यात्म ईश्वर प्रेम, आपसी सुसंवाद, अन्न एवं जल का महत्व का ज्ञान दिया जाता है। संक्षिप्त में प्रत्येक विद्यार्थी के जीवन की मजबूत आधारशिला एवं सुयोग्य पथ की दिशा देने का कार्य तथा एक आदर्श नागरिक बनकर, समृध्द राष्ट्र निर्माण का कार्य करने में सहकार विद्या मंदिर हर क्षण तत्पर है और इसी तत्परता को कायम भी रखेगा।

अध्यक्षा श्रीमती कोमलजी झंवर अपनी प्रतिभा, रुचि और ज्ञान के आधार से सहकार विद्या मंदिर व ज्युनिअर कॉलेज, बुलढाणा **शेष पृष्ठ १० पर...**

पृष्ठ ९ से... एवं ग्रामीण क्षेत्रों में विस्तारित इसकी शाखाओं को केवल विस्तारित ही नहीं बल्कि अच्छे स्तर की शिक्षा एवं खेल लाभ प्रदान करने में व्यस्त हैं। स्कूल के लिए परिश्रम एवं अहोरात्र ध्यान रखते हुए राष्ट्रीय स्तर पर सहकार विद्या मंदिर की पहचान बनाने की लगन आज रंग ला रही है।

श्री. राधेश्यामजी चांडक एवं श्रीमती पुष्पा राधेश्यामजी चांडक को माता-पिता रुप में सम्मानित किया उनकी दो बेटियों ने श्रीमती कीर्ति मनीषजी कासट, पुणे एवं श्रीमती कोमल सुकेशजी झंवर। श्रीमती कोमलजी ने अपनी माँ, पिता, बड़ी बहन 'कीर्ति' के सानिध्य में स्कूली शिक्षा करते हुए, शिक्षा की राह में अग्रसर होती हुई महाविद्यालयीन पढाई पूरी की। बहन कीर्ति के विवाह उपरांत 'कीर्ति पथ' पर चलते हुए मन में कुछ करने की उमंग थी। अपने पिता श्री राधेश्यामजी के प्रारंभ किए व्यवसाय के प्रयास, कष्ट और उतार चढाव को देखकर मन की उमंग ज्योत की रोशनी ने बैचेन कर दिया और बस ठान लिया कि 'सभी को मिले शिक्षा' इसी क्षेत्र में काम करना है। इसी शिक्षा प्रेम के तहत उन्होंने आरंभ हुई सहकार विद्या मंदिर, बुलढाणा में अध्यापिका का पद स्वीकार किया, अपने नाम स्वरुप 'कोमल' उन्होनें छोटे विद्यार्थियों के कोमल मन और उनकी कोमल भावनाओं को जानना समझना ही जरुरी माना। फलस्वरुप आज अध्यापकों की और विद्यार्थियों की मानसिकता से भली भांति परिचित है।

व्यक्ति का जीवन वही नहीं है जो उसके बाह्य से झलकता है। अपने पिता के अनुसार वे सुलझी हुई हैं। स्वभाव में नम्रता, दया, करुणा, सम्मान, आदर में पिता की तरह उनमें ये सभी गुण समाए हैं। हालांकि प्रशासनिक स्तर पर परिस्थितीनुरुप कामकाज के दौरान कठोरता को भी अपनाना ही पड़ता है। सच्चाई हो या संस्था अनुशासन, उसे अपनी विशेष पहचान बनाने के लिए आवश्यक होती है।

पिता के भव्य गौरव का स्वप्न साकार करने में उन्हें अपने पति श्री. डॉ. सुकेशजी झंवर, (Chairman, Buldhana Urban Co-Operative Society) का हर कदम दर साथ मिल रहा है। बुलढाणा अर्बन को भारत की तथा एशिया में प्रथम को-ऑप. संस्था का दर्जा प्राप्ती में 'पिता-पुत्री-पति' का दूसरे से मिला साथ ही नहीं, बल्कि एक दूसरे के विचारों का सम्मान भी दिखाई देता है। प्रगति के दौरान अनेक रुकावटें भी निराश करती हैं, लेकिन हर परिस्थिती में इनके मुख की मुस्कान संस्था के कर्मचारियों को भी सदैव आगे बढने की ही प्रेरणा देती है, यह सफलता का राज ही आज बुलढाणा अर्बन एवं सहकार विद्या मंदिर की मुखरित विनम्रता से भरी सफलता की गूँज चारो ओर है।

अंत में यही कहना होगा कि प्रगति और सुधार के कार्यों से बुलढाणा अर्बन की पहचान बने मा.श्री. राधेश्यामजी चांडक, मा.डॉ. श्री. सुकेशजी झंवर एवं माननिया श्रीमती कोमल सुकेशजी झंवर सभी के दिलों को स्पर्श कर रहे हैं, क्योंकि इन्होंने कभी भी छोटी बात नही की जैसे वे किसी निम्न कोटि की बात के लिए जन्में ही नहीं है, ऐसे शक्तिशाली, विनम्र, प्रेरणाशील व्यक्तित्व परिवार को 'मैं भारत हूँ' पत्रिका परिवार प्रणाम करता है, आशा करता है कि चांडक-झंवर-कासट परिवार के द्वारा 'भारत' का नाम विश्व के चहूं ओर गुंजायमान होता रहेगा।

-मैं भारत हूँ

ऐतिहासिक स्थलों और आध्यात्मिकमहत्व के लिए प्रसिद्ध
बुलढाणा के इतिहास प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाएं

ओम प्रकाश शर्मा
मो. ९८६०३३०१५३

तिरुपति कंस्ट्रक्शन
तिरुपति फर्नीचर

सोलंके लेआउट, वार्ड नंबर २५,
बुलढाणा, महाराष्ट्र, भारत- ४४३००१

माहेश्वरी समाज के उत्पत्ति दिवस 'महेश नवमी' के पावन पर्व पर
आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ

Shyam Bhatter
Mob: 9836027724

Ramdev Styles
(भट्टड़ जी)

6, Hanspukur Lane (Laxmi Plaza), Room No. 415
to 422 (4th Floor), Near Tewari Brothers, Burra
Bazar, Kolkata, West Bengal, Bharat- 700007

आइये हम सभी 'जय भारत' से अपने सुधिजनों का अभिवादन करें। जय भारत!

महाराष्ट्र के बुलढाणा में तहसील

चिखली

महाराष्ट्र के 'बुलढाणा' जिले की एक महत्वपूर्ण तहसील और शहर 'चिखली' है, इसे अक्सर 'बुलढाणा' जिले की राजनीतिक राजधानी के रूप में भी जाना जाता है।

प्रशासन और भूगोल

यह जिला मुख्यालय 'बुलढाणा' से लगभग २५ किमी की दूरी पर स्थित है। चिखली विदर्भ और मराठवाड़ा क्षेत्रों की सीमा पर स्थित है और नागपुर-पुणे राजमार्ग पर एक महत्वपूर्ण पड़ाव है।

रेणुका देवी मंदिर

चालुक्य कालीन प्राचीन मंदिर

रेणुका देवी मंदिर: यह शहर के सबसे प्रसिद्ध और महत्वपूर्ण धार्मिक स्थलों में से एक है, जहाँ भारी संख्या में श्रद्धालु आते हैं।

सातगांव भुसारी के मंदिर: चिखली तहसील के 'सातगांव भुसारी गाँव' में चालुक्य कालीन प्राचीन मंदिर स्थित हैं, जो अपनी बेहतरीन वास्तुकला और शिल्पकारी के लिए जाने जाते हैं।

श्री मौनी बाबा संस्थान: यह एक प्रसिद्ध आध्यात्मिक केंद्र है।

अन्य स्थान: यहाँ के प्रमुख मंदिरों में श्री वीर हनुमान मंदिर, पंचशील बुद्ध विहार और हजरत मदनी शाह वली बाबा दरगाह भी शामिल हैं।

देउलगांव राजा

देउलगांव राजा महाराष्ट्र के बुलढाणा जिले की एक महत्वपूर्ण तहसील और ऐतिहासिक शहर है, यह विदर्भ और मराठवाड़ा की सीमा पर स्थित है। धार्मिक महत्व के कारण इसे अक्सर 'प्रतितिरुपाती' (महाराष्ट्र का तिरुपती) भी कहा जाता है।

श्री बालाजी महाराज मंदिर: यह यहाँ का सबसे प्रसिद्ध स्थल है, यहाँ हर साल श्री बालाजी महाराज की भव्य यात्रा और उत्सव आयोजित किए जाते हैं।

ऐतिहासिक विरासत: यह शहर छत्रपति शिवाजी महाराज के दादा, राजे लखुजीराव जाधव की जागीर का एक हिस्सा था।

प्राचीन मंदिर और बारव: यहाँ कई प्राचीन मंदिर और 'बारव' (सीढ़ीदार कुएं) स्थित हैं, जो ऐतिहासिक वास्तुकला का उदाहरण हैं।

प्रशासनिक केंद्र: यहाँ एक नगर परिषद है जो १९४९ में स्थापित हुई थी। यहाँ का तहसील कार्यालय राजस्व और भूमि रिकॉर्ड के प्रबंधन का मुख्य केंद्र है।

गाँव: इस तहसील के अंतर्गत लगभग ६२-६४ गाँव आते हैं।

प्रमुख स्थान (पर्यटन और आस्था)

➯श्री बालाजी महाराज मंदिर: प्रमुख आस्था का केंद्र।
➯श्री गुगलादेवी मंदिर: स्थानीय मान्यता वाला प्राचीन मंदिर।
➯धोत्रा नंदई: यहाँ के पुरातन मंदिर अपनी शिल्पकारी के लिए जाने जाते हैं।

मेहकर

'मेहकर' महाराष्ट्र के बुलढाणा जिले की एक ऐतिहासिक और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध तहसील है, यह पैंगंगा नदी के तट पर और अजंता पर्वतमाला के पठार पर स्थित है।

भगवान शारंगधर बालाजी मंदिर: यह 'मेहकर' का शेष पृष्ठ १२ पर...

ऐतिहासिक स्थलों और आध्यात्मिक महत्व के लिए
प्रसिद्ध बुलढाणा के इतिहास प्रकाशन पर
हार्दिक शुभकामनाएं
पुरणमल शर्मा
मो:०९४२१४९३७५५
मोनु फर्निचर मार्ट
सभी प्रकारके फर्निचर, किचन ट्रॉली, ॲल्युमिनियम खिडकी,
अल्युमिनियम पार्टीशन तयार करके मिलेंगे।
राजगुरे ले-आऊट, पाणीके टाकी के पास, बुलढाणा, महाराष्ट्र, भारत

ऐतिहासिक स्थलों और आध्यात्मिक महत्व के लिए
प्रसिद्ध बुलढाणा के इतिहास प्रकाशन पर
हार्दिक शुभकामनाएं
अंकीत सुभाषचंद बेगाणी
मो. ९८९०४३४८८८, ९६०४५२८७५२, ८८०५३४११०३
महावीर मेवावाला
सभी प्रकार के ड्रायफ्रूट और किराणा होलसेल
एवंम रिटेल मिलनेका विश्वसनिय स्थान
न. प. कॉम्प्लेक्स दु. नं. १७ भुसावल चौक खामगांव, बुलढाणा,
महाराष्ट्र, भारत- ४४४३०३

पृष्ठ ११ से... सबसे प्रमुख आकर्षण है, यहाँ भगवान बालाजी की एक ही काले पत्थर से बनी भव्य मूर्ति है, जिसे एशिया की सबसे बड़ी बालाजी मूर्ति माना जाता है।

पौराणिक कथा: लोककथाओं के अनुसार भगवान विष्णु ने 'शारंगधर' के रूप में 'मेघंकर' नामक राक्षस का वध इसी स्थान पर किया था, जिससे इस शहर का नाम 'मेहकर' पड़ा।

ऐतिहासिक विरासत: 'मेहकर' का उल्लेख 'आईन-ए-अकबरी' में एक राजस्व जिले के मुख्यालय के रूप में मिलता है, यहाँ प्राचीन हेमाडपंती वास्तुकला के मंदिर और अवशेष भी पाए जाते हैं।

कंचनी महल

धोत्रा नंदई

तहसील: मेहकर तहसील के अंतर्गत लगभग १६० गाँव आते हैं।

नदी: यह शहर पैंगंगा नदी के किनारे बसा हुआ है।

प्रमुख पर्यटन स्थल:

कंचनी महल: शहर के पास स्थित यह एक ऐतिहासिक स्मारक है।

धोत्रा नंदई: यहाँ के प्राचीन मंदिर अपनी नक्काशी के लिए प्रसिद्ध हैं।

सिंदखेड राजा

सिंदखेड राजा बुलढाणा जिले की एक अत्यंत महत्वपूर्ण ऐतिहासिक तहसील है, यह मुख्य रूप से स्वराज्य की जननी, राजमाता जीजाऊ (छत्रपति शिवाजी महाराज की माता) के जन्मस्थान के रूप में पूरे भारत में प्रसिद्ध है।

राजमाता जीजाऊ का जन्मस्थान: जीजामाता का जन्म इसी शहर में लखुजीराव जाधव के महल में हुआ था।

जीजाऊ सृष्टि

लखुजीराव जाधव की समाधि

जाधव परिवार का गढ़: यह १६वीं और १७वीं शताब्दी में शक्तिशाली जाधव मराठा परिवार का मुख्यालय था।

लखुजीराव जाधव का महल (राजवाड़ा): वह ऐतिहासिक स्थान जहाँ जीजामाता का बचपन बीता।

जीजाऊ सृष्टि: राजमाता जीजामाता को समर्पित एक भव्य स्मारक और संग्रहालय।

रंग महल: जाधव कालीन एक सुंदर वास्तुशिल्प।

लखुजीराव जाधव की समाधि: यह अपनी बेहतरीन नक्काशी और भव्यता के लिए प्रसिद्ध है।

नीलकंठेश्वर मंदिर और बारव: यहाँ प्राचीन हेमाडपंती शैली का मंदिर और सीढ़ीदार कुआँ (बारव) स्थित है।

काळा कोट: शहर के चारों ओर बनी पुरानी सुरक्षा दीवार के अवशेष।

प्रमुख कार्यक्रम: हर साल १२ जनवरी को जीजाऊ जन्मोत्सव के अवसर पर यहाँ लाखों श्रद्धालु और पर्यटक आते हैं।

लोनार

'लोनार' न केवल 'बुलढाणा' जिले की एक तहसील है, बल्कि यह अपने अद्वितीय लोनार क्रेटर (सरोवर) के कारण पूरी दुनिया में मशहूर है।

उत्पत्ति: माना जाता है कि लगभग ५२,००० साल पहले एक विशाल उल्कापिंड के पृथ्वी से टकराने के कारण इस विशाल गड्ढे का निर्माण हुआ था।

विशेषता: यह दुनिया का इकलौता ऐसा क्रेटर है जो बेसाल्टिक चट्टानों में बना है, इसका पानी खारा और क्षारीय दोनों है।

पिंक लेक: कुछ साल पहले इस झील का पानी अचानक गुलाबी हो गया था, जिसने वैज्ञानिकों और पर्यटकों को हैरान कर दिया था।

पिंक लेक

दैत्यसूदन मंदिर

दैत्यसूदन मंदिर: शहर के बीचो-बीच स्थित भगवान विष्णु का एक प्राचीन मंदिर है, इसकी वास्तुकला खजुराहो के मंदिरों से मिलती-जुलती है।

धार: यह झील के किनारे स्थित एक प्राकृतिक जलधारा है, जहाँ लोग स्नान करते हैं।

प्राचीन मंदिर: झील के चारों ओर कई छोटे-बड़े हेमाडपंती शैली के मंदिर स्थित हैं।

दूरी: यह जिला मुख्यालय 'बुलढाणा' से लगभग ९०-९५ किमी और मेहकर से करीब २०-२२ किमी दूर है।

वन्यजीव: 'लोनार' क्रेटर के आसपास का क्षेत्र अब एक वन्यजीव अभयारण्य है, जहाँ विभिन्न प्रकार के पक्षी और जानवर पाए जाते हैं।

'लोनार' को 'रामसर साइट' का सम्मान भी प्राप्त है, जिससे इसका अंतरराष्ट्रीय महत्व और बढ़ गया है। यहाँ ट्रेकिंग और पक्षी दर्शन के लिए कई लोग आते हैं।

खामगांव

'खामगांव' बुलढाणा जिले की सबसे बड़ी तहसील और एक प्रमुख व्यापारिक केंद्र है, इसे इसकी प्रसिद्ध चांदी की बाजार के कारण 'रजत नगरी' (सिल्वर सिटी) के रूप में जाना जाता है।

चांदी का बाजार (सिल्वर सिटी): यह शहर अपने शुद्ध चांदी के उत्पादों के लिए पूरे भारत में प्रसिद्ध है, यहाँ का चांदी बाजार काफी पुराना और जीवंत है।

चांदी का बाजार (सिल्वर सिटी)

घाटपुरी जगदंबा माता मंदिर: यह एक प्राचीन मंदिर है जहाँ कोजागरी पूर्णिमा पर भव्य उत्सव **शेष पृष्ठ १३ पर...**

आइये हम सभी 'जय भारत' से अपने सुधिजनों का अभिवादन करें। जय भारत!

पृष्ठ १२ से... मनाया जाता है।

शिवाजी वेस दरवाजा: यह पुराने समय के किले का एकमात्र जीवित द्वार है, जो अब एक ऐतिहासिक स्मारक के रूप में स्थित है।

लाकड़ी गणपति मंदिर

धार्मिक स्थल: शहर में लाकड़ी गणपति मंदिर और सुटाळा स्थित महादेव मंदिर जैसे कई प्राचीन धार्मिक स्थल हैं।

व्यापारिक केंद्र: ब्रिटिश काल से ही यह कपास का एक प्रमुख व्यापार केंद्र रहा है, जिसके कारण इसे 'कपास का शहर' भी कहा जाता था।

औद्योगिक क्षेत्र: यहाँ एक विकसित औद्योगिक क्षेत्र है जिसमें विनिर्माण, फार्मास्यूटिकल्स और ऑटोमोबाइल जैसे विभिन्न उद्योग स्थित हैं।

विकास: हाल ही में यहाँ २३०० करोड़ से अधिक के विकास कार्यों का उद्घाटन किया गया है।

शेगांव

'शेगांव' बुलढाणा जिले की एक प्रसिद्ध तहसील और नगर परिषद है, जिसे मुख्य रूप से संत गजानन महाराज की पावन भूमि के रूप में जाना जाता है, इसे इसकी पवित्रता और धार्मिक महत्व के कारण 'विदर्भ का पंढरपुर' भी कहा जाता है।

श्री संत गजानन महाराज संस्थान: यह 'शेगांव' का मुख्य आकर्षण है, यह मंदिर संत गजानन महाराज की समाधि पर बना है, जिन्होंने ८ सितंबर १९१० को यहाँ समाधि ली थी, यह संस्थान अपनी स्वच्छता, अनुशासन और नि:स्वार्थ सेवा के लिए पूरे भारत में प्रसिद्ध है।

श्री संत गजानन महाराज संस्थान

आनंद सागर

अनुशासन: यहाँ दर्शन के लिए कोई कल्चर नहीं है, सभी भक्तों को एक ही कतार में लगकर दर्शन करने होते हैं।

महाप्रसाद: संस्थान द्वारा प्रतिदिन हजारों भक्तों के लिए नि:शुल्क महाप्रसाद (भोजन) की व्यवस्था की जाती है।

आनंद सागर: यह संस्थान द्वारा विकसित एक विशाल आध्यात्मिक और मनोरंजन पार्क है, जो लगभग ६५० एकड़ में फैला है। यहाँ एक झील, सुंदर बगीचे, आर्ट गैलरी और बच्चों के लिए मनोरंजन की सुविधाएँ हैं।

विवेकानंद केंद्र: आनंद सागर परिसर के भीतर ही स्थित एक शांतिपूर्ण स्थल है।

श्री गोमाजी महाराज मंदिर: यह नागझरी (शेगांव के पास) में स्थित है। गोमाजी महाराज को गजानन महाराज का गुरु माना जाता है।

प्रसिद्ध कचौरी: 'शेगांव' की कचौरी पूरे महाराष्ट्र में प्रसिद्ध है और यहाँ आने वाले पर्यटकों के लिए एक प्रमुख आकर्षण है।

भक्त निवास: संस्थान द्वारा भक्तों के रुकने के लिए बहुत ही किफायती और उच्च गुणवत्ता वाली आवास सुविधाएँ (भक्त निवास) उपलब्ध हैं।

मलकापुर

'मलकापुर' बुलढाणा जिले की एक महत्वपूर्ण तहसील और शहर है, जिसे 'विदर्भ का प्रवेश द्वार' माना जाता है, यह शहर विशेष रूप से अपने कपास उत्पादन और ऐतिहासिक महत्व के लिए जाना जाता है।

विशेषताएं और अर्थव्यवस्था

सफेद सोना: ब्रिटिश काल के दौरान मलकापुर को इसके उच्च गुणवत्ता वाले कपास उत्पादन के कारण 'विदर्भ का सफेद सोना' कहा जाता था।

सफेद सोना (कपास)

व्यापारिक केंद्र: यह क्षेत्र के सबसे बड़े कपास उत्पादकों में से एक है और यहाँ कई दाल मिलें तथा कपास ओटाई के कारखाने स्थित हैं।

लाल मिर्च: कपास के अलावा यह लाल मिर्च के उत्पादन के लिए भी एक प्रसिद्ध केंद्र है।

मलकापुर किला: नलगंगा नदी के किनारे स्थित यह एक भुईकोट (जमीनी) किला है, यह ऐतिहासिक काल में एक महत्वपूर्ण सैन्य ठिकाना हुआ करता था।

नेताजी सुभाष चंद्र बोस: १५ सितंबर १९३९ को नेताजी ने यहाँ के सार्वजनिक पुस्तकालय मैदान में अपना अंतिम **शेष पृष्ठ १४ पर...**

सदियों का इतिहास हमारा,
गौ-संवर्धन अपनाया है यह अर्थ,
धर्म और प्रकृति के, संतुलन का पैमाना है !!

Madhusudan Agarwal
भ्रमणध्वनि : 9932152616 / 9434658920
Nilay Agarwal
भ्रमणध्वनि : 9609729066
Shri Ganesh Rice Mill
Po. Boro, Dist.Purulia, West Bengal, Bharat - 723131
भारतीय भाषा को अपनाओ अभियान भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान

पृष्ठ १३ से... ऐतिहासिक भाषण दिया था।

नलगंगा नदी: शहर इसी नदी के तट पर बसा है, इसके पास दत्ताला में प्राचीन सतालेश्वर शिव मंदिर स्थित है।

नेमिवंत हवेली: राजा नेमिवंत परिवार द्वारा बनाई गई यह हवेली अपनी ऐतिहासिक वास्तुकला के लिए जानी जाती है।

चांगदेव महाराज मंदिर: तापी और पूर्णा नदियों के संगम पर स्थित यह प्राचीन मंदिर मलकापुर के पास एक महत्वपूर्ण तीर्थ स्थल है।

तारापुर जलप्रपात: प्रकृति प्रेमियों के लिए यह मलकापुर के पास एक सुंदर आकर्षण है।

नंदुरा

'नंदुरा' बुलढाणा जिले की एक प्रमुख तहसील और शहर है, जो राष्ट्रीय राजमार्ग ६ और मुंबई-हावड़ा रेलवे लाइन पर स्थित है, इसे विश्व प्रसिद्ध हनुमान मूर्ति के कारण एक विशेष पहचान मिली है।

१०५ फीट ऊंची हनुमान मूर्ति: यह शहर का सबसे बड़ा आकर्षण है, साल २००० में स्थापित यह भव्य प्रतिमा लिम्का बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में दर्ज है। हनुमान जयंती के अवसर पर यहाँ रिमोट कंट्रोल के जरिए लगभग १५०-२५० किलो की फूलों की माला चढ़ाने की अनोखी परंपरा है।

अंबादेवी गढ़: यह नंदुरा का एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थल है।

जबलेश्वर महादेव मंदिर: नंदुरा खुर्द में स्थित यह मंदिर इस क्षेत्र के सबसे प्राचीन मंदिरों में से एक माना जाता है।

बालाजी मंदिर: यहाँ दक्षिण भारतीय वास्तुकला शैली का एक सुंदर बालाजी मंदिर भी है।

डेयरी उत्पाद: नंदुरा अपने उच्च गुणवत्ता वाले दूध उत्पादों, विशेषकर खोया (मावा) के लिए प्रसिद्ध है, जिसकी आपूर्ति आसपास के कई जिलों में की जाती है।

कृषि: यह तहसील मुख्य रूप से कपास और सोयाबीन के उत्पादन के लिए जानी जाती है। यहाँ तेल मिलें और दाल मिलें भी बड़ी संख्या में स्थित हैं।

प्राचीन उद्योग: पुराने समय में नंदुरा हाथ से बने सूती धौतियों और साड़ियों के लिए भी जाना जाता था।

मोटाला

'मोटाला' बुलढाणा जिले की एक महत्वपूर्ण तहसील और शहर है, यह मुख्य रूप से अपनी कृषि और रणनीतिक भौगोलिक स्थिति के लिए जाना जाता है। यह तहसील बुलढाणा से मलकापुर जाने वाले मार्ग पर स्थित है।

दूरी: जिला मुख्यालय बुलढाणा से इसकी दूरी मात्र २५ किमी है।

तहसील: मोटाला तहसील के अंतर्गत लगभग ११२ गाँव आते हैं। मुख्य फसलें: यहाँ की अर्थव्यवस्था पूरी तरह कृषि पर आधारित है। मुख्य रूप से कपास, सोयाबीन और मक्का की खेती बड़े पैमाने पर की जाती है।

नलगंगा बांध: तहसील में स्थित नलगंगा बांध कृषि सिंचाई का मुख्य स्रोत है, जिससे आसपास के कई गाँवों को पानी मिलता है। यह न केवल सिंचाई के लिए महत्वपूर्ण है, बल्कि स्थानीय लोगों के लिए एक सुंदर पिकनिक स्पॉट भी है।

प्राचीन मंदिर: मोटाला और इसके आसपास के गाँवों (जैसे पिंप्री गौली) में कई पुराने हनुमान मंदिर और महादेव मंदिर स्थित हैं।

रोहिणखेड का ऐतिहासिक मैदान: मोटाला तहसील में स्थित रोहिणखेड का ऐतिहासिक महत्व है, जहाँ प्राचीन काल में महत्वपूर्ण युद्ध हुए थे, यहाँ की मस्जिद और स्थापत्य कला देखने योग्य है। शेष पृष्ठ १५ पर...

आइये हम सभी 'जय भारत' से अपने सुधिजनों का अभिवादन करें। जय भारत!

पृष्ठ १४ से...

जलगांव जामोद

'जलगांव' जामोद महाराष्ट्र के बुलढाणा जिले की एक ऐतिहासिक और महत्वपूर्ण तहसील है, जो सतपुड़ा पहाड़ियों की तलहटी में बसी है।

नाम की उत्पत्तिः 'जलगांव' का अर्थ है 'पानी का गाँव', जो यहाँ के प्रचुर जल संसाधनों के कारण पड़ा। 'जामोद' शब्द फारसी शब्द 'जा-ए-मौत' (मृत्यु का स्थान) से विकसित हुआ माना जाता है।

पुराना नामः प्राचीन काल में इस स्थान को 'विराट नगरी' के नाम से जाना जाता था।

मुगल संबंधः इतिहास के अनुसार, मुगल सम्राट शाहजहाँ की पत्नी मुमताज महल को गर्भावस्था के दौरान यहीं समस्या हुई थी, जिसके बाद बुरहानपुर में उनकी मृत्यु हो गई।

अंबा बरवा वन्यजीव अभयारण्यः यह सतपुड़ा की पहाड़ियों में स्थित एक घना वन क्षेत्र है, जो बाघों और अन्य वन्यजीवों के लिए प्रसिद्ध है।

कपिलधारा जलप्रपातः सतपुड़ा के जंगलों के बीच स्थित एक सुंदर मौसमी जलप्रपात और पिकनिक स्पॉट।

अंबा बरवा वन्यजीव अभयारण्य

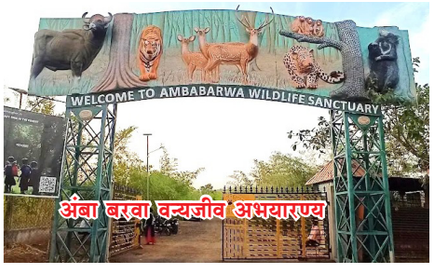

शाही किलाः यहाँ ऐतिहासिक किले के अवशेष देखे जा सकते हैं।

धार्मिक स्थलः तहसील में प्राचीन अंबा देवी मंदिर, दरगाह-ए-हकीमी और कई प्राचीन समाधियाँ स्थित हैं।

संग्रामपुर

'संग्रामपुर' महाराष्ट्र के बुलढाणा जिले की एक तहसील और नगर पंचायत है, जो सतपुड़ा पर्वत श्रृंखला की तलहटी में स्थित है।

सतपुड़ा की गोद में: यह तहसील उत्तर में सतपुड़ा की पहाड़ियों और घने वन क्षेत्र से घिरी हुई है।

नदियां: पूर्णा नदी तहसील की दक्षिणी सीमा से बहती है, जबकि वान, बेबला नदियां और पांडव नाला इसके अन्य जल स्रोत हैं।

अंबा बरवा वन्यजीव अभयारण्यः सतपुड़ा पर्वतमाला में स्थित यह अभयारण्य वन्यजीव प्रेमियों और ट्रेकर्स के लिए एक बेहतरीन स्थान है।

वारी हनुमान (धरण): वान नदी पर बना यह बांध और हनुमान मंदिर एक प्रसिद्ध तीर्थ और पर्यटन स्थल है, यह बुलढाणा, अकोला और अमरावती जिलों की सीमा पर स्थित है।

वारी हनुमान (बांध)

बावनबीरः यहाँ का प्राचीन महादेव मंदिर और शाही मस्जिद ऐतिहासिक वास्तुकला के सुंदर उदाहरण हैं।

सोनालाः यहाँ का धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व स्थानीय स्तर पर काफी प्रसिद्ध है।

जटाशंकर जलप्रपातः वसाली के पास स्थित यह एक सुंदर प्राकृतिक झरना है, जो मानसून के दौरान पर्यटकों को आकर्षित करता है।

दूरीः यह जिला मुख्यालय बुलढाणा से लगभग ११५-१२० किमी की दूरी पर स्थित है।

कृषिः यहाँ की अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से कृषि पर टिकी है, जहाँ कपास और सोयाबीन प्रमुख नकदी फसलें हैं।

गाँवः इस तहसील के अंतर्गत लगभग १०२-१२२ गाँव आते हैं।

कनेक्टिविटीः राज्य राजमार्ग १७३, १९४ और १९५ इस तहसील को शेगांव और 'खामगांव' जैसे प्रमुख शहरों से जोड़ते हैं।

जटाशंकर जलप्रपात

महेश नवमी के पावन पर्व पर हार्दिक शुभकामनायें
सर्वे भवन्तु सुखिनः
Anil Kabra
9435096597 / 9365060995
Yash Kabra
7002014821
indigo
Power Solutions
COMPLETE SOLAR SOLUTIONS
Reliable ● Efficient ● Profitable Solar Systems
✓ SOLAR PANELS
UTL - EASTMAN - VIKRAM- LUMINOUS
ADANI- TATA- AVAADA
RENEWSYS- RENEW
✓ INVERTERS
SOLIS - SUNGROW- POLYCAB - HAVELLS
EASTMAN - LUMINOUS
✓ SOLAR WIRES
POLYCAB - MICROTEK
✓ MOUNTING STRUCTURE
GI APOLLO (Heavy Duty)
Thickness: 2 MM Size: 60 x 60 mm
Designed for maximum strength and long-term durability.
SHREE KAZIRANGA UDYOG
Daily Market Road, Dergaon,
Dist. Golaghat, Assam, Bharat-785614

महाराष्ट्र बुलढाणा में जैन मंदिर

श्री १००८ केशरियानाथ दिगम्बर जैन संस्थान

श्री १००८ केशरियानाथ दिगम्बर जैन संस्थान प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ (ऋषभदेव)।

स्थान: जामोद गाँव (तहसील जळगांव जामोद, जिला- बुलढाणा, महाराष्ट्र, भारत)। यह दिगम्बर जैन संप्रदाय का दो मंजिला मंदिर है।

ऐतिहासिक महत्व व निर्माण काल: मंदिर का निर्माण १७वीं शताब्दी में हुआ था।

संस्थापक: इसका निर्माण तत्कालीन मुस्लिम शासकों के साथ यात्रा करने वाले जैन राजपूत व्यापारी समुदाय द्वारा करवाया गया था।

प्राचीन प्रतिमा: मंदिर में विराजमान आदिनाथ जी की मुख्य प्रतिमा संवत १८१२ (सन् १७५६) की है।

श्री सुमतिनाथ भगवान श्वेताम्बर जैन मंदिर

श्री सुमतिनाथ भगवान श्वेताम्बर जैन मंदिर, ओल्ड टाउन, मलकापुर (बुलढाणा) जैन समाज का एक अत्यंत महत्वपूर्ण और पवित्र तीर्थ स्थल है, यह मंदिर अपने शांत वातावरण और सुंदर वास्तुकला के लिए प्रसिद्ध है।

मुख्य विवरण मूलनायक: जिनालय के मुख्य वेदी पर जैन धर्म के ५वें तीर्थंकर सुमतिनाथ की आकर्षक प्रतिमा विराजमान है।

स्थान: ओल्ड टाउन (पुराना शहर), मलकापुर, जिला - बुलढाणा पिन कोड: ४४३१०१, महाराष्ट्र, भारत।

श्री १००८ इच्छामणि पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर

श्री १००८ इच्छामणि पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर भडोला (बुलढाणा) महाराष्ट्र के बुलढाणा जिले में स्थित एक शांत और पवित्र जैन धार्मिक स्थल है, यह मंदिर स्थानीय दिगम्बर जैन समुदाय के लिए भक्ति और आध्यात्मिक शांति का एक प्रमुख केंद्र है।

मुख्य विवरण मूलनायक: मंदिर की मुख्य वेदी पर जैन धर्म के २३वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ की प्रतिमा विराजमान है।

स्थान: भडोला गांव, जिला बुलढाणा, पिन कोड: ४४३००२, महाराष्ट्र, भारत।

श्री १००८ चंद्रप्रभु दिगम्बर जैन मंदिर

श्री १००८ चंद्रप्रभु दिगम्बर जैन मंदिर एक प्रमुख और पवित्र जैन तीर्थ स्थल है, यह मंदिर स्थानीय जैन समुदाय की गहरी आस्था और भक्ति का केंद्र है।

मुख्य विवरण मूलनायक: इस मंदिर के मुख्य वेदी पर जैन धर्म के ८वें तीर्थंकर चंद्रप्रभु की प्रतिमा विराजमान है।

स्थान: यह मंदिर महावीर नगर, बुलढाणा, पिन कोड: ४४३००१, महाराष्ट्र, भारत में स्थित है।

श्री १००८ महावीर स्वामी दिगम्बर जैन मंदिर, दसाला

महाराष्ट्र के बुलढाणा जिले के 'दसाला' गांव में स्थित एक प्रसिद्ध और पवित्र धार्मिक स्थल है, यह मंदिर जैन धर्म के २४वें तीर्थंकर महावीर को समर्पित है।

स्थान और पता: तीर्थंकर महावीर स्वामी दिगम्बर जैन मंदिर, दसाला, जिला - बुलढाणा, महाराष्ट्र, भारत - ४४४३०३

मूलनायक: २४वें तीर्थंकर भगवान महावीर

धार्मिक मान्यता: यहाँ जैन श्रद्धालुओं द्वारा नियमित रूप से पूजा, आरती, जीव दया और अभिषेक जैसी धार्मिक गतिविधियाँ संपन्न की जाती हैं।

सुविधाएँ: मंदिर परिसर में शांत वातावरण और दर्शनार्थियों के लिए उचित व्यवस्था है।

श्री आदेश्वर स्वामी जैन श्वेताम्बर मंदिर, शेगांव (बुलढाणा)

यह मंदिर सफेद संगमरमर से निर्मित है, इसके ऊपर सुंदर नक्काशीदार शिखर बना हुआ है, जो श्वेतांबर वास्तुकला की पारंपरिक शैली को दर्शाता है।

मूलनायक भगवान: मंदिर में विराजमान मुख्य प्रतिमा श्री आदेश्वर स्वामी (आदिनाथ/ऋषभदेव भगवान) की है, यह श्वेत संगमरमर की पद्मासन मुद्रा में स्थापित एक बहुत ही भव्य मूर्ति है।

आइये हम सभी 'जय भारत' से अपने सुधिजनों का अभिवादन करें। जय भारत!

बुलढाणा में अग्रवाल समाज व अग्रसेन भवन

बुलढाणा अग्रवाल समाज

महाराष्ट्र के बुलढाणा जिले में रहने वाले अग्रवाल समुदाय का एक संगठित और प्रभावशाली संगठन है, यह समाज अपने व्यापारिक कौशल, सामाजिक कार्यों और धार्मिक दानशीलता के लिए जाना जाता है।

अग्रवाल समाज की उत्पत्ति: अग्रवाल समाज की उत्पत्ति महाराजा अग्रसेन के समय से मानी जाती है, जिन्होंने अग्रोहा (हरियाणा) में इसकी नींव रखी थी।

बुलढाणा में आगमन: व्यापार और उद्योग के विस्तार के सिलसिले में अग्रवाल समाज के पूर्वज बुलढाणा, खामगाँव, शेगाँव और मलकापुर जैसे व्यापारिक केंद्रों में आकर बसे।

अग्रसेन भवन, शेगांव

अग्रसेन भवन, शेगांव

बुलढाण शहर के सबसे प्रसिद्ध और सुविधाजनक सामुदायिक भवनों में से एक अग्रसेन भवन, (स्टेट हाईवे), शेगांव, बुलढाणा, महाराष्ट्र, भारत-४४४२०३। संपर्क नंबर: +९१ ७२६५२ ५२१५९ हैं। यह भवन शेगांव रेलवे स्टेशन से मात्र ३८० मीटर की दूरी पर स्थित है, जिससे यहाँ पहुंचना बेहद आसान है। यहाँ पारिवारिक उत्सवों, सगाई और शादियों के लिए एक बड़ा हॉल उपलब्ध है। शेगांव में संत गजानन महाराज मंदिर के दर्शन के लिए आने वाले श्रद्धालुओं के लिए यहाँ कम दरों पर साफ-सुथरे कमरों की सुविधा उपलब्ध है।

महाराजा अग्रसेन रिसॉर्ट, चिखली

महाराजा अग्रसेन रिसॉर्ट, चिखली

बुलढाणा जिले का एक प्रमुख ३-स्टार विवाह और पर्यटन स्थल महाराजा अग्रेसन भवन (रिसॉर्ट) चिखली में प्लॉट नंबर पी-३८, एम. आई.डी.सी, मेहकर फाटा के पास, जालना रोड, चिखली, बुलढाणा, महाराष्ट्र ४४३२०१ में स्थापित है।

बुलढाणा में माहेश्वरी समाज व भवन

बुलढाणा माहेश्वरी समाज माहेश्वरी समुदाय का एक प्रमुख और सक्रिय सामाजिक संगठन है, यह समाज अपनी धार्मिक आस्था, व्यापारिक कुशलता और सेवा कार्यों के लिए जाना जाता है।

प्रमुख विशेषताएं और कार्य धार्मिक आयोजन: बुलढाणा माहेश्वरी समाज प्रतिवर्ष महेश नवमी (समाज का वंशोत्पत्ती दिवस) का पर्व बड़े उत्साह के साथ मनाता है, इस अवसर पर समाज द्वारा भगवान महेश (शिव) की पूजा-अर्चना और शोभायात्रा का आयोजन किया जाता है। सामाजिक एवं सांस्कृतिक **गतिविधियां:** समाज के मेधावी विद्यार्थियों का सम्मान, सांस्कृतिक कार्यक्रम, और जरूरतमंद परिवारों की सहायता के लिए नियमित रूप से आयोजन किए जाते हैं।

सामुदायिक भवन (महेश भवन): जिले के विभिन्न शहरों में माहेश्वरी समाज के अपने भवन हैं, जिनका उपयोग शादी-विवाह, सामाजिक बैठकों और अन्य मांगलिक कार्यों के लिए किया जाता है।

माहेश्वरी भवन, शेगाँव

माहेश्वरी भवन, शेगाँव

मटकारी गली (ब्राह्मण पुरा), शेगाँव, जिला बुलढाणा, महाराष्ट्र, भारत-४४४२०३ यह भवन 'शेगाँव' शहर के बिल्कुल मध्य (हार्ट ऑफ़ द सिटी) में स्थित है, यह संत गजानन महाराज मंदिर के पास आने वाले तीर्थयात्रियों के लिए बहुत सुविधाजनक है। यह भवन शादी-विवाह, सगाई, जन्मदिन की पार्टी और छोटे पारिवारिक सम्मेलनों के लिए उपयुक्त है। यहाँ आने वाले मेहमानों के लिए बुनियादी सुविधाएं जैसे रेस्टूम (शौचालय) उपलब्ध हैं। यहाँ बाहर से आने वाले समाज के लोगों के लिए कम बजट में ठहरने और भोजन की व्यवस्था की जाती है।

ऐतिहासिक स्थलों और आध्यात्मिक महत्व के लिए प्रसिद्ध बुलढाणा के इतिहास प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाएं

ADVOCATE

ॲड. जितेंद्र कोठारी (बी.कॉम, एल एल बी) मो. ९४२२८८१७३३ ९८८१५६९९९

ॲड. चेतन कोठारी (बी.एस.एल., एल एल बी) मो. ९०७५६००५७४

jkothari@rediffmail.com / kotharichetan22@gmail.com

शांती निकेतन नगर, पोलीस ग्राऊंड जवळ, बुलढाणा, महाराष्ट्र, भारत -४४३००१

ऐतिहासिक स्थलों और आध्यात्मिक महत्व के लिए प्रसिद्ध बुलढाणा के इतिहास प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाएं

Dr. N. K Jain Mob:- 9422949591

Mahendra N. Bedmutha Mob:- 9422949589

VIJAYSHREE TRADERS

All Types of Plumbing Material, Water Tank, Sanitaryware etc.

Ranjangaon (S.P.) Road, PANDHARPUR (MIDC Waluj), Aurangabad, Maharashtra, Bharat - 431136

बुलढाणा के प्राचीन मंदिर

चालुक्य एरा श्री कमलजा देवी टेंपल, लोणार

चालुक्य एरा श्री कमलजा देवी टेंपल

'लोणार' सरोवर के किनारे स्थित श्री कमळजा देवी मंदिर एक प्राचीन और ऐतिहासिक स्थल है, जिसका निर्माण चालुक्य राजवंश के शासनकाल (लगभग ८वीं-९वीं शताब्दी ईस्वी) के दौरान माना जाता है, यह मंदिर न केवल धार्मिक रूप से महत्वपूर्ण है, बल्कि अपनी विशिष्ट वास्तुकला और भौगोलिक स्थिति के कारण भी विशेष है।

गोमुख धार मंदिर

गोमुख धार मंदिर

'लोणार' सरोवर के ऊपरी छोर पर स्थित गोमुख मंदिर (जिसे धार मंदिर या सीता नहानी भी कहा जाता है) यहाँ का सबसे महत्वपूर्ण और लोकप्रिय धार्मिक स्थल है। यह मंदिर अपनी निरंतर बहने वाली प्राकृतिक जलधारा (धारा) के लिए प्रसिद्ध है, जिसके कारण इसे 'धार मंदिर' कहा जाता है।

बालाजी मंदिर, देऊलगाँव राजा

बालाजी मंदिर, देऊलगाँव राजा

'बालाजी मंदिर', देऊलगाँव राजा महाराष्ट्र के बुलढाणा जिले का एक अत्यंत महत्वपूर्ण और जागृत देवस्थान है, जिसे 'महाराष्ट्र का तिरुपति' भी कहा जाता है।

बुधनेश्वर प्राचीन शिव मंदिर, मढ

बुलढाणा-अजिंठा मार्ग पर स्थित बुधनेश्वर महादेव मंदिर, मढ एक अत्यंत प्राचीन और ऐतिहासिक धार्मिक स्थल है, यह मंदिर न केवल अपनी वास्तुकला, बल्कि अपनी भौगोलिक विशेषता के कारण भी प्रसिद्ध है।

रेणुका देवी मंदिर, चिखली

रेणुका देवी मंदिर

'बुलढाणा' जिले के चिखली में स्थित श्री रेणुका माता मंदिर यहाँ की ग्रामदेवी और एक अत्यंत जागृत देवस्थान माना जाता है। यह मंदिर न केवल धार्मिक आस्था का केंद्र है, बल्कि अपनी अनूठी परंपराओं के लिए भी प्रसिद्ध है।

वेंकट गिरि बालाजी मंदिर राजुर घाट

'राजुर घाट' बुलढाणा मलकापुर रोड पर स्थित है और इसकी प्राकृतिक सुंदरता मनमोहक है, लोग विभिन्न राज्यों से इस घाट के दर्शन के लिए आते हैं। 'राजुर घाट' में कई मंदिर, नदियाँ, पेड़ और झाड़ियाँ देखी जा सकती हैं, इस घाट की प्राकृतिक सुंदरता पर्यटकों को आकर्षित करती है, यहाँ का मौसम अपेक्षाकृत ठंडा रहता है, जो पर्यटकों को लुभाता है। 'बुलढाणा' जिले के प्रमुख प्राकृतिक पर्यटन स्थलों में से एक 'राजुर घाट' है।

'राजुर घाट' चारों ओर पहाड़ियों से घिरा हुआ है, ये घाट के कुछ दर्शनीय स्थल हैं, इन घाटों में कई अन्य पर्यटक आकर्षण भी हैं, जैसे कि वेंकट गिरि बालाजी मंदिर। राजौर घाट पर संकट मोचन हनुमान मंदिर भी स्थित है, राजौर घाट में कई धार्मिक और प्राकृतिक पर्यटन स्थल होने के कारण प्रतिवर्ष बड़ी संख्या में पर्यटक आते हैं।

वेंकट गिरि बालाजी मंदिर राजुर घाट

महेश नवमी के पावन पर्व पर आप सबको हार्दिक शुभकामनाएँ

ॐ सेवा त्याग सदाचार

सर्वे भवन्तु सुखिनः

Sham Kantilalji Malani
Mob.: 9422925417

Anand Kantilalji Malani
Mob.: 9422176617

MALANI TRADERS &
ANAND TRADERS

Hardware, Structural Steel, Cement,
Paints, Coloured Tins, Bricks

Wholesale & Retail

asianpaints Ambuja Cement tulsi Chettinad cement POLAAD

Post. Mondha, Taluka Selu, Dist. Parbhani,
Maharashtra, Bharat-431503

माहेश्वरी समाज वंशोत्पत्ति दिवस

सेवा त्याग सदाचार

महेश नवमी हिंदू धर्म में एक अत्यंत पावन और पुण्यदायी तिथि है, जो विशेष रूप से भगवान शिव और माता पार्वती को समर्पित होती है। यह पर्व ज्येष्ठ मास की शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि को मनाया जाता है। इस दिन भगवान महेश (शिव) की विशेष पूजा-अर्चना की जाती है। 'महेश' का अर्थ होता है 'महान ईश्वर' अर्थात भगवान शिव, और 'नवमी' का तात्पर्य है चंद्र मास की नवमी तिथि। यह पर्व धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण है, विशेषकर नवमी तिथि को जन्म लेने वाले माहेश्वरी समाज के लिए।

महेश नवमी का महत्व

महेश नवमी का विशेष महत्व इस बात में निहित है कि यह दिन भगवान शिव के संरक्षण और आशीर्वाद को प्राप्त करने का अवसर प्रदान करता है। यह तिथि भगवान शिव और माता पार्वती के आशीर्वाद से महेश्वरी समाज की उत्पत्ति की स्मृति में मनाई जाती है। ऐसी मान्यता है कि इस दिन भगवान शिव ने अपने त्रिशूल से राक्षसों का नाश कर पृथ्वी पर धर्म की पुनः स्थापना की थी।यह दिन भक्तों के लिए मोक्षदायक और कल्याणकारी माना जाता है। इस दिन भगवान शिव का पूजन करने से सभी पापों का क्षय होता है और जीवन में सुख, समृद्धि एवं शांति आती है। विशेष रूप से दंपति इस दिन संतान सुख की प्राप्ति, दांपत्य जीवन में प्रेम और स्थायित्व के लिए भगवान महेश और देवी पार्वती की पूजा करते हैं।

महेश नवमी क्यों मनाई जाती है? पौराणिक कथा के अनुसार

प्राचीन काल में एक समय पृथ्वी पर धर्म का पतन हो गया था। राक्षसों के अत्याचार से देवता और ऋषि-मुनि अत्यंत पीड़ित थे। तब उन्होंने भगवान शिव से सहायता की प्रार्थना की। भगवान शिव ने नवमी तिथि को उन राक्षसों का संहार किया और धर्म की पुनः स्थापना की। इसी तिथि पर महेश्वरी समाज की उत्पत्ति भी हुई थी, जो धर्म, सेवा और संस्कारों के लिए समर्पित होता है।

माहेश्वरी समाज की वंशोत्पत्ति दिवस

प्रतिवर्ष, ज्येष्ठ माह के शुक्ल पक्ष की नवमी को 'महेश नवमी' का उत्सव माहेश्वरी समाज के द्वारा हर्षोल्लास से मनाया जाता है। परंपरागत मान्यताओ के अनुसार माहेश्वरी समाज की वंशोत्पत्ति युधिष्ठिर संवत ९ के ज्येष्ठ शुक्ल नवमी को हुई थी, तब से माहेश्वरी समाज प्रतिवर्ष की ज्येष्ठ शुक्ल नवमी को 'महेश नवमी' के नाम से माहेश्वरी वंशोत्पत्ति दिन के रूप में बहुत धूम धाम से मनाता है। यह पर्व मुख्य रूप से भगवान महेश (महादेव) और माता पार्वती की आराधना को समर्पित है।

मान्यता है कि, युधिष्टिर संवत ९ जेष्ट शुक्ल नवमी के दिन भगवान महेश और आदिशक्ति माता पार्वती ने ऋषियों के श्राप के कारण पत्थरवत् बने हुए ७२ क्षत्रिय उमराओं को श्रापमुक्त किया था और पुनर्जीवन देते हुए कहा कि, 'आज से तुम्हारे वंश पर (धर्म पर) हमारी छाप रहेगी, आप सब 'माहेश्वरी'' कहलाओगे'।

इस प्रकार भगवान महेश और माता पार्वती की कृपा से ७२ क्षत्रिय उमरावों को पुनर्जीवन मिला और माहेश्वरी समाज की उत्पत्ति हुई। इसलिए भगवान महेश और माता पार्वती को माहेश्वरी समाज के संस्थापक मानकर माहेश्वरी समाज में यह उत्सव 'माहेश्वरी वंशोत्पत्ति दिन' के रुप में बहुत ही भव्य तरीके से और बड़ी ही धूम-धाम से मनाया जाता है। जिस की तैयारी शेष पृष्ठ २० पर...

भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए अभियान में क्या आप सहयोग देना चाहते हैं तो संपर्क करें-9322307908
Follow for more updates
https://www.instagram.com/mainbharathun_?
अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें
https://www.instagram.com/mainbharathun_?

पृष्ठ १९ से... कुछ दिनों पहले से ही शुरु हो जाती है।
इस दिन धार्मिक व सांस्कृतिक कार्यक्रम किए जाते हैं –

भगवान शिव की पूजा और आराधना: महेश नवमी के दिन सभी समाज जन एकत्रित होकर भगवान शिव और माता पार्वती की विशेष पूजा और आराधना करते हैं। शोभायात्रा निकाली जाती हैं, महेश वंदना गाई जाती है, भगवान शिव की महा आरती होती है और समाज जन एक साथ प्रसाद ग्रहण करते है।

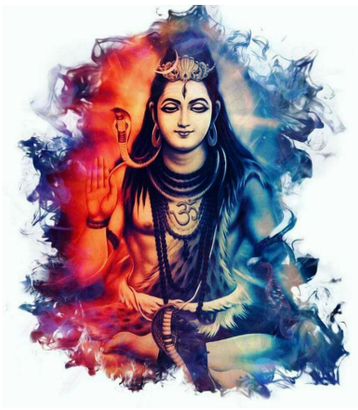

भजन संध्या और सांस्कृतिक कार्यक्रम: सांस्कृतिक कला के क्षेत्र में कार्यक्रम, जैसे कि भजन संध्या, संगीत सभा और नृत्य कार्यक्रम, महेश नवमी पर आयोजित किए जाते हैं।

समाज सेवा अभियान: नए भवनों का निर्माण कार्य, समाज के कार्य जो समाज जन की भलाई के साथ मानव हित में भी सहयोगी हो। इसके लिए माहेश्वरी बंधू एकत्रित होकर कार्य करते है, कार्यों को प्रगतिशील बनाने के लिए महासभा ने प्रदेश में छोटी-छोटी सभाओं का विस्तार किया। जो अब देश और विदेश सब जगह कार्यान्वित है।

धार्मिक सभा: महेश नवमी के दिन धार्मिक सभाएं आयोजित होती हैं, जिनमें समाज को प्रगतिशील बनाने के लिए नए सुझावों की रुपरेखा तैयार होती है।

समाज में सामाजिक एकता की प्रोत्साहन: समाज में समरसता और एकता के साथ मिलकर सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है जिससे हर उम्र के समाजवासी बड़े हर्ष से एक-दूसरे के साथ मिलकर इस धार्मिक उत्सव को मनाते हैं।

महेश नवमी के पावन अवसर पर मुख्य रूप से माहेश्वरी समाज द्वारा पारंपरिक और सात्विक राजस्थानी व्यंजनों का भोग भगवान महेश (शिव) और माता पार्वती को लगाया जाता है। इस दिन घरों में बिना प्याज और लहसुन के शुद्ध शाकाहारी भोजन तैयार किया जाता है।

१. मीठे व्यंजन

चूरमा: गेहूं के आटे की बाटी को पीसकर, उसमें प्रचुर मात्रा में देसी घी, बूरा (चीनी) और सूखे मेवे मिलाकर पारंपरिक चूरमा बनाया जाता है।

सूजी या आटे का हलवा: शुद्ध देसी घी में सूजी या गेहूं के आटे को भूनकर, चीनी और इलायची पाउडर डालकर झटपट बनने वाला यह हलवा भगवान शिव के प्रिय भोगों में से एक है।

खीर: चावल, दूध और चीनी को धीमी आंच पर गाढ़ा करके बनाई गई मलाईदार खीर इस दिन विशेष रूप से बनाई जाती है।

मालपुआ: सौंफ और दूध के घोल से बने मीठे मालपुए, जिन्हें तलकर चाशनी में डुबोया जाता है।

२. मुख्य भोजन

पंचमेल दाल: पांच तरह की दालों (मूंग, चना, अरहर, मसूर और उड़द) को मिलाकर बनाई जाने वाली पारंपरिक राजस्थानी दाल, जिसमें शुद्ध घी, जीरा और हींग का छौंक लगाया जाता है।

बाटी: ओवन या कंडे (उपले) की आंच पर सेकी गई गेहूं के आटे की पारंपरिक गोल बाटियां, जिन्हें दाल और चूरमे के साथ परोसा जाता है।

पूरी और कचौड़ी: त्योहार के आनंद को बढ़ाने के लिए सादी पूरियां या फिर दाल भरी कुरकुरी कचौड़ियां भी बनाई जाती हैं।

गट्टे की सब्जी या आलू-टमाटर की सात्विक सब्जी: बिना प्याज-लहसुन के दही की ग्रेवी वाले बेसन के गट्टे या फिर जीरे और टमाटर से बनी आलू की रसीली सब्जी।

साबूदाना खिचड़ी या वड़ा: मूंगफली और सेंधा नमक के साथ बनाई गई खिली-खिली साबूदाना खिचड़ी या कुरकुरे वड़े।

रोटी खिलाओ गाय को प्यार से
पुण्य कमाओ इस संसार से

DINESH KANORIA
Chairman

KANORIA
CHEMBOND PRIVATE LIMITED

MANUFATURING AND EXPORTER OF POLYESTER RESIN, SATURATED, UNSATURATED, PURE PHENOLIC RESIN, ALKYL PHENOLIC RESIN

Office
906, Unique Tower, Gaiwadi Industrial Estate, Off S.V. Road, Goregaon West, Mumbai, Maharashtra, Bharat 400062 Ph: +91 22 28776126
TelFax : +91 22 66963120 Email: resin@kanorias.com Web: www.kanorias.com

Factory
40/1/1, Alman Village Road, Off Wada Manor Road, Village Varle, Wada, Dist. Thane, Maharashtra, Bharat - 421303

माहेश्वरी परिवार की कुल माताएं

१.सेवल्या माता- माता जी का स्थान राजस्थान के भीलवाड़ा जिले की मांडल तहसील के ग्राम बागौर में है। संवल्या माताजी का मंदिर अति प्राचीन है जो ब्राम्हणी माता के नाम से भी प्रसिद्ध है इस क्षेत्र के लोगों में माताजी के प्रति अटुट श्रद्धा है एवं लोगों की मन्नतें यहां से पूर्ण होती है।

२.बंधर माता- उदयपुर के चित्तौड़गढ के रास्ते पर एयरपोर्ट रोड पर मोमार गाँव से आगे १० किमी. दूर बायें हाथ की तरफ अकोला जानेवाली सड़क पर 'तानागाँव' पड़ता है, इसी 'तानागाँव' की पहाड़ी पर मंदीर है, नवरात्री में नवमी के दिन यहाँ विशाल मेले का आयोजन होता है।

३.सिसणाय माता- माता जी का मंदिर मांडलगांव (भीलवाड़ा) में बताया गया है, सम्पूर्ण जानकारी उपलब्ध नहीं हो पाई है।

४.झीण माता (सीकर)- मंदिर के पुजारी जी के अनुसार कि सोमानी, जाजू, बजाज, काबरा, राठी, बिड़ला, तोषनीवाल, छापरवाला, तापाड़िया खांप वाले भी मानते हैं, सीकर से २८ किमी. दूर दक्षिण अरावली गिरी में झीण माता का भव्य मंदिर प्राचीन ऐतिहासिक है।

५.बिसवन्त माता (जानकारी उपलब्ध नहीं)

६.चान्दसैण माता (चान्दसिणी माता)- अजमेर से ७० किमी. णालपुरा(टोंक) से १५ किमी टोडा रायसिंह रोड पर टोरडी ग्राम है, माता के पवित्र दर्शन होते हैं।

७.फलौदी माता-समदानी, सिंगी, तुलावटया, वियाल, जुजनोत्या, मालाणी, टुवाणी, गांधी, नख वाले भी फौलादी माता को मानते हैं। मेडता रोड में फौलादी ब्रम्हाणी माता का मंदिर है।

८.संचाय माता- माता जी का मंदिर ओसियां (जिला जोधपुर) में है, भव्य ऐतिहासिक मंदिर है, जैन ओसवाल व अन्य समाजवाले भी मानते हैं।

९.अमल माता- श्री अमलमाता जी का मंदिर ग्राम रिछेड में है। ३५० सीढियों के ऊपर भव्य विशाल मंदिर है, चार भुजाजी से रिछेड़ जाना पड़ता है।

१०.चामुण्डा माता- जोधपुर दुर्ग में चामुण्डा माताजी का भव्य मंदिर है, माताजी का एक अन्य मंदिर सोजत स्थित एक पहाड़ी की गुफा में स्थित है।

११. लिकासण माता- लिकासण माता का मंदिर नागौर जिले के लिकासण गांव में है, यह स्थान नागौर से ७५ किमी. डीडवाना से १८ किमी. छोटी खाटू से ५ किमी. दूर है।

१२.मात्री माता- मात्री माता का स्थान नागौर जिले के खींवसर गाँव में है, यहाँ पूजा नहीं होती है। मात्री माता के इस मंदिर में कोई प्रतिमा नहीं है, अपितु प्रतीक रूप से इस स्थान पर मात्री माता का स्थान है।

१३.दधीमति माता-पुजारी जी ने बताया कि कचौल्या, झखोटिया, इनाणी, लोया, गिलडा, पलोड खांप वाले भी कुल माता दधिमति को मानते हैं। गोठ मांगलोद जिला नागौर में "मां दधिमति शक्तिपीठ" नाम से ऐतिहासिक प्रसिद्ध मंदिर है।

१४.सैणल माता-जानकारी उपलब्ध नहीं

१५.डेरूं माता- जानकारी उपलब्ध नहीं

१६.जजेसल माता- जानकारी उपलब्ध नहीं

१७.खींवज माता,पोकण (जैसलमेर)- इनका पोकरण के दक्षिण में ४ कि. मी. दूर फलसूण्ड बाडमेर रोड पर मंदिर तक पक्की सड़क है, खींवज माता ट्रस्ट पोकरण के नाम से बना हुआ है। नवरात्री में मेला भरता है तब दूर-दूर से यात्री आते है।

१८.मम्माय माता- जानकारी उपलब्ध नहीं

१९.जाखण माता- जानकारी उपलब्ध नहीं

२०.सांगल माता- मंदिर भादरिया में स्थित है, यह स्थान एशिया प्रसिद्ध है, यहां अण्डर ग्राउण्ड लॉयब्रेरी है, जिसमें लाखों पुस्तकें हैं तथा १५००० गायों की विशाल गौशाला है।

२१.विसु माता- विसु माता जी को बिसानी, जेठा भट्टड़, कुलधरिया, मेहरा नख वाले भी मानते हैं। जैसलमेर के गडसीसर तालाब के पास मुक्तेश्वर मंदिर से आगे गडीसर आड (बन्धा) के पास मंदिर है।

२२.आशापुर माता- आशापुर माता का पोकरण (जिला जैसलमेर) से ३किमी. शहर से दूर भव्य विशाल मंदिर है, मंदिर के सामने आशापुर माता धर्मशाला भी बनी हुई है।

२३.पाढाया माता- बीकानेर में पाढाया माता का मंदिर पारीक चौक में स्थित है, मंदिर में ठहरने और रहने की व्यवस्था है। मंदिर में रोजाना पुजा अर्चना होती है।

२४.गायल माता- गायल माता मंदिर का जोधपुर के आसोप में है। मंदिर का अ.भा. झंवर समाज का ट्रस्ट बना हुआ है, रहने और ठहरने की अच्छी सुविधा है।

२५.चावण्डा माता- चावण्डा माता का मंदिर जैसलमेर मे १३ कि.मी. लिदरवा (जैन तीर्थ मंदिर) के पास है। (चुन्धी गांव में मंदिर है) मंदिर में ठहरने और रहने की व्यवस्था है, बताते हैं कि श्री चवन ऋषि ने यहां पर तपस्या की थी।

२६.चानण माता- जानकारी उपलब्ध नहीं

२७.सुषमाद माता- सुषमाद माताजी का मंदिर नागौर **शेष पृष्ठ २२ पर...**

भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए अभियान में क्या आप सहयोग देना चाहते हैं तो संपर्क करें-9322307908
Follow for more updates
https://www.instagram.com/mainbharathun_?
अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें
https://www.instagram.com/mainbharathun_?

पृष्ठ २१ से... पुष्कर व मेडता के बीच में कुचेरा पड़ता है।

२८.भद्रकाली माता- भद्रकाली माता का मंदिर हनुमानगढ टाऊन से ७ कि. मी दूर है, यहां भव्य मंदिर बना हुआ है, मंदिर में ठहरने की व्यवस्था पुजारी जी करते हैं।

२९.सुजासन माता- माताजी का मंदिर नागौर जिले के परबतसर में है, मंदिर में माताजी की दोनों समय सेवा-पूजा होती है।

३०.कल्याणी माता- जानकारी उपलब्ध नहीं-

३१.मूसा माता- यह 'दरक' खांप की कुल माता है, मंदिर व स्थान की जानकारी उपलब्ध नहीं है।

३२.खुंखर माता- माता जी का मंदिर नागौर जिले के तोषीना गाँव में है। नागौर से ५० किलोमीटर वाया कोलिया पडता है। यहां श्री भगवानदास जी तोतला, जलगाँव द्वारा मंदिर व धर्मशाला का निर्माण कराया गया है, रहने और ठहरने की बहुत सुंदर व्यवस्था है, मंदिर भव्य व कलात्मक बना हुआ है।

३३.नौसर माता (पुष्कर), अजमेर- नौसर माताजी का मंदिर अजमेर के समीप पर्वत के मध्य पुष्कर से पहले प्रतिष्ठित है। नवदुर्गा के रूप मेंस्थापित नौसर मातजी की प्रतिमा वाला मंदिर करीब १२०० वर्ष सं भी प्राचीन है।

३४.नागणैचा माता- नागणैचा माता का प्राचीन मंदिर बीकानेर शहर निवासियों की आस्था का केन्द्र है। नवरात्रि में मेला लबता है।

३५.बिसला माता- फलौदी शहर के भट्टडों के चौक में बिसल माताजी का भव्य मंदिर बना है। अभी उसमें मूर्ति नहीं लगनी बाकी है। नवरात्रि में मेला लगता है।

३६.खाण्डल माता- मारवाड मूण्डवा जिला नागौर में खाण्डल माता की ५०० वर्ष प्राचीन बंग खांप की कुल माता की प्रतिमा का सन्त श्री आत्माराम जी खाकी के दृष्टान्त द्वारा ज्ञान तालाब के प्रांगण में १३ अप्रैल २००२ को प्रकटय हुआ, जिसकी प्राण प्रतिष्ठा ११ अप्रैल २००३ को हुई। यह मूर्ति श्री नृसिंह मंदिर मूण्डवा में स्थित है।

३७.माणुधणी माता- जानकारी उपलब्ध नहीं।

३८. नौशल्या माता- नागौर जिले के जायल तहसील में नौशल्य माता का मंदिर है। इस मंदिर में प्रतिमा नहीं है। माण्डकर पूजारी जी ने बताया कि यहाँ अग्रवाला समाज केसाथ खटौड खँप वाले भी आते हैं।

३९.आशवरी माता- जानकारी उपलब्ध नहीं।

४०.मुन्दल माता- मुन्दल माता जी का मंदिर नागौर जिला के मुन्दियाड गाँव में है, जो नागौर से २४ कि.मी. दूर है। ठहरने तथा रहने की इच्छी व्यवस्था है।

४१.जीवण माता- जानकारी उपलब्ध नहीं।

४२.आशापुरा माता- नाडोल जिला से ६० किमी. उदयपुर के रास्ते में नाडोल जिला पाली पडता है। आसणी कोट के पास विशाल प्रसचीन मंदिर है।

४३.डाहरी माता- जानकारी उपलब्ध नहीं।

४४.बागलेश्वरी माता- जानकारी उपलब्ध नहीं।

४५.बागलोद माता- जानकारी उपलब्ध नहीं।

४६.हिंगलाज माता- बीकानेर के पास कोलायत से ३ कि.मी. की दूरी पर मढ गाँव में हिंगलाज माताका पुराना ऐतिहासिक मंदिर सम्वत् १६४८ में बना हुआ बताते हैं।

४७.गारस माता- जानकारी उपलब्ध नहीं।

४८.धोलेश्वरी माता- धोलेश्वरी माताजी का मंदिर अलवर जिले के लक्ष्मणगढ तहसील में वहलुकला ग्राम के नजदीक पहाड़ी पर स्थित है, यह धोल पर्वत के नाम से जाना जाता है।

४९.भैंसादश्री माता- भैंसादश्री माता का मंदिर नीमच सिटी के मीणा मोहल्ले में नदी किनारे पर है, यह मंदिर ६०० वर्ष पुराना बताते हैं।

५०.नवासण माता- जानकारी उपलब्ध नहीं।

५१.धरज माता, पोकरण- माताजी का मंदिर पोकरण शहर के मध्य स्थित है। विवाह-जात, झुडुला के लिए गाँधी, नावंदर परिवार आते हैं, इसके अलावा धरजल माता का मंदिर घेवडा जिला जोधपुर में भी है।

५२.डोरसिया माता,डारू- नागौर जिले के खींवसर से मैन रोड से जोरापुर गाँव से ६ किमी. दूर डारू गाँव है। डारू गाँव के २ किमी. दूर तालाब के किनारे मंदिर बना हुआ है। डोरसिया माता जी ट्रस्ट सेवा समिति गाँव डारू, नागौर नाम से बनी हुई है।

५३.सोढल माता- गोलकिया, पंसारी नख वाले मानते हैं। सोढत माताजी का मंदिर जैसलमेर दुर्ग में थोड़े आगे चलते ही अखैप्रोल के पास में ही स्थापित है, यह मंदिर ४०० वर्ष पुराना बताते हैं।

५४.बीस हत्थ माता, जोधपुर- इनका मंदिर भैरूनाथ जोधपुर में जैन मंदिर के प्रांगण में है, वहाँ पर धर्मशाला भी है। जोधपुर में माहेश्वरी भवन के अनेकों होटल, धर्मशालाएं हैं जहाँ पर ठहरने की अच्छी व्यवस्था है।

५५.द्विजेश्वरी माता- यह मंदिर हनुमानगढ जिले के नोहर तहसील के भूकरका गाँव में है। कुल माता का नाम द्विजेश्वरी माता है। माताजी के मंदिर में पचीसिया नख वालों की विवाह की जात तथा मुण्डन संस्कार होते हैं।

५६.भादरिया माता- भादरिया (जैसलमेर) में भव्य मंदिर है। यहा ठहरने के लिए माहेश्वरी भवन की धर्मशालाएं व होटल भी हैं।

५७.ब्राम्हणी माता- माँ दुर्गा के दूसरे स्वरूप का नाम ब्रम्हचारिणी है यहां शब्द का अर्थ तपस्या है। कठोर तपस्या को चारिणी होने के कारण ही प्रसिद्धि 'ब्रम्हचारिणी' नाम से हुई।

महेश जिनका नाम है, कैलाश जिनका धाम है,
देवों के देव महादेव को, हम सबका प्रणाम है...
महेश नवमी पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएँ
सर्वे भवन्तु सुखिनः

पुरुषोत्तमदास पवनकुमार भुतड़ा
मो. ९४०४११२२९९
अध्यक्ष माहेश्वरी सभा येलदरी
क्लॉथ शॉप, मेन रोड, येलदरी कॉम्प, जिंतूर,
परभणी, महाराष्ट्र, भारत-४३१५०९
email: pawanbhutada10@gmail.com
भारत को 'भारत' ही बोला जाए एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

आइये हम सभी 'जय भारत' से अपने सुधिजनों का अभिवादन करें। जय भारत!

माहेश्वरियों का अति पवित्र दिन महेश नवमी

भारत एक धर्मनिरपेक्ष देश है जहां विभिन्न धर्म, जाति और समुदाय के भिन्न-भिन्न रिति-रिवाज व अनुष्ठान मौजूद हैं। इन्हीं समुदायों में से एक समुदाय है महेश्वरी समाज, जिस तरह प्रत्येक समुदाय के अपने अनुष्ठान और त्यौहार होते हैं वैसे ही महेश्वरी समुदाय का भी अपना अनुष्ठान है, जिसे 'महेश नवमी' कहते हैं। यह समुदाय देश के उत्तरी हिस्से में अधिक प्रचलित है और हर साल महेश्वरी समाज महेश नवमी उत्साह और हर्ष के साथ मनाता है। हालांकि यह समुदाय छोटा है लेकिन फिर भी पूरे देश में फैला हुआ है। महेश नवमी हिन्दू कैलेंडर के अनुसार ज्यैष्ठ माह के शुक्ल पक्ष की नवमी को मनाई जाती है, इस बार महेश नवमी १९ जून को मनाई जाएगी। यह त्यौहार मुख्य रूप से भगवान शिव के भक्तों द्वारा मनाया जाता है। भगवान शिव के कई नाम है कोई उन्हें महादेव तो कोई भोले भंडारी, तो कोई त्रिनेत्र कहता है। शिव के लोकप्रिय नामों में से एक नाम 'महेश' है। यह नाम भगवान शिव की ओर अत्याधिक भक्ति का प्रतीक है क्योंकि ऐसा माना जाता है कि इस दिन वह अपने भक्तों के सामने पहली बार दिखाई दिए थे। भगवान शिव के वरदान स्वरूप महेश्वरी समाज की उत्पत्ति मानी गई है, इनका उत्पत्ति दिवस ज्येष्ठ शुक्ल नवमी है, जो महेश नवमी के रूप में मनाई जाती है। माना जाता है कि महेश स्वरूप में आराध्य भगवान 'शिव' पृथ्वी से भी ऊपर कोमल कमल पुष्प पर बेलपत्ती, त्रिपुंड, त्रिशूल, डमरू के साथ लिंग रूप में शोभायमान होते हैं।

महेश नवमी का महत्व: 'महेश नवमी' मनाने के पीछे कई कहानियां छिपी है। खांडेलसेन नाम का एक राजा था, जिसको पुत्र नहीं था, इसलिए उन्होंने भगवान शिव की पूर्ण समर्पण और भक्ति के साथ पूजा की, जिसके बाद भगवान ने उसे सुजानसेन नामक बेटा होने का आशीर्वाद दिया, बाद में वह राज्य का राजा बन गया। धार्मिक ग्रंथों के अनुसार महेश्वरी समाज के पूर्वज क्षत्रिय वंश के थे। एक दिन जब इनके वंशज शिकार पर थे तो इनके शिकार कार्यविधि से ऋषियों के यज्ञ में विघ्न उत्पन्न हो गया, जिस कारण ऋषियों ने इन लोगों को श्राप दे दिया था कि तुम्हारे वंश का पतन हो जायेगा, महेश्वरी समाज श्राप के कारण ग्रसित हो गया, किन्तु ज्येष्ठ माह में शुक्ल पक्ष की नवमी के दिन भगवान शिव जी की कृपा से उन्हें श्राप से मुक्ति मिली तथा शिव जी ने इस समाज को अपना नाम दिया, इसलिए इस दिन से यह समाज 'महेश्वरी' के नाम से प्रसिद्ध हुआ। भगवान शिव जी की आज्ञानुसार महेश्वरी समाज ने क्षत्रिय कर्म को छोड़कर वैश्य कर्म को अपना लिया, अतः आज भी महेश्वरी समाज वैश्य रूप में पहचाने जाते हैं।

महेश नवमी का जश्न: 'महेश नवमी' मुख्य रूप से सनातनियों का त्यौहार है और देश के सभी हिस्सों के साथ विशेष रूप से राजस्थान में मनाया जाता है। देश के सभी हिस्सों में भक्त इस दिन भगवान महेश और देवी पार्वती की पूजा करते हैं। मंदिर फूलों से सजाए जाते हैं और पूरे स्थान को पवित्र किया जाता है। इस दिन नए विवाहित जोड़ों से विशेष रूप से खुशी और सद्भावना के साथ अपने जीवन में नया चरण शुरू करने के लिए भगवान शिव और देवी पार्वती की पूजा करने के लिए कहा जाता है।

महेश नवमी के अनुष्ठान: 'महेश नवमी' पर्व पर रात भर विभिन्न यज्ञों और मंत्रों का उच्चारण किया जाता हैं। भगवान शिव की विशेष झांकी निकाली जाती है, भगवान महेश से प्रार्थना की जाती हैं, उनकी कहानियां और प्रशंसा सुनाई जाती है। भगवान महेश का अभिषेक किया जाता है और शिव-पार्वती को इस दिन मंदिरों में सुंदर ढंग से सजाया जाता है। भजन संध्या मंदिर परिसर में होती है और आखिर में सभी भक्त प्रसाद ग्रहण करते हैं। लोग इस उत्सव को भगवान शिव और देवी पार्वती के प्रति अत्याधिक समर्पण, प्रेम और विश्वास के साथ मनाते हैं। एक विशेष धारणा है कि इस दिन जो महिलाएं बच्चे की इच्छा रखती हैं तथा शिव जी से इस दिन विशेष प्रार्थना करतीं है तो उन्हें भगवान शिव आशीर्वाद देते हैं, उनकी हर इच्छा पूरी करते हैं। केवल मंदिरों में ही इस दिन यज्ञ और प्रार्थना नहीं की जाती, अपितु लोग अपने-अपने घरों में भी महेश-पार्वती की विशेष पूजा-अर्चना करते हैं, साथ ही शिव-पार्वती से सुखी जीवन की प्रार्थना भी करते हैं।

ऐतिहासिक स्थलों और आध्यात्मिक महत्व के लिए
प्रसिद्ध बुलढाणा के इतिहास प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाएं

हंसराज वर्मा
मों:९८५०७२५४०९

महालक्ष्मी ज्वेलर्स

सभी प्रकारके सोना-चांदी के आभुषण निर्माता एवंम नवग्रह राशी के रत्न (खडे), मोती अंगुठी, जोडवे, ब्रासलेट मिलेंगे.
निम्बवाड़ी चौक, कॉर्नर की दुकान, मलकापुर
जि. बुलढाणा, महाराष्ट्र, भारत- ४४३१०१

अखिल भारतीय अग्रवाल संगठन की दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यकारिणी ३०व ३१मई को इंदौर में सम्पन्न

इंदौरः अखिल भारतीय अग्रवाल संगठन की दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यकारिणी मीटिंग का आयोजन आगामी ३० एवं ३१ मई २०२६ को देश के स्वछतम शहर इंदौर मध्यप्रदेश में हुआ। अखिल भारतीय अग्रवाल संगठन के राष्ट्रीय महामंत्री राजेश भारूका ने जानकारी देते हुए बताया कि इस राष्ट्रीय कार्यकारिणी मीटिंग का आयोजन अखिल भारतीय अग्रवाल संगठन के राष्ट्रीय चेयरमेन प्रदीप मित्तल के सानिध्य में एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष कुलभूषण मित्तल की अध्यक्षता में किया गया। इस राष्ट्रीय कार्यकारिणी मीटिंग में काफ़ी समाजोपयोगी विषयों पर मंथन एवं समीक्षा करके महत्वपूर्ण निर्णय गया। मीटिंग मे देश के सभी प्रांतों के प्रदेश अध्यक्ष, प्रदेश महामंत्री, राष्ट्रीय पदाधिकारी, राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य एवं विशेष आमंत्रित सदस्य उपस्थित रहकर आगामी समय में अग्रवाल संगठन द्वारा किए जाने वाले कार्यों का निर्धारण किया गया। इस मीटिंग में समाज की राजनीतिक भागीदारी के बारे में भी गहन चिन्तन किया गया। आने वाले समय मे समाज के अधिक से अधिक लोग राजनीतिक क्षेत्र में सक्रिय भागीदारी निभाए इसके लिए व्यापक रूप रेखा बनाई गई। समाज में वैवाहिक सम्बन्धों में हो रहे बिखराव पर गहन चिन्तन करके उसका निवारण कैसे हो उसकी रूपरेखा बनाई जाएगी।अन्य विभिन्न समितियों के राष्ट्रीय स्तर पर संयोजक की नियुक्ति की जाएगी। जिससे राष्ट्रीय विचारधारा को पूरे देश में लागू की जा सके।

'त्रिमातृ शक्ति दिवस' पर लिया गया प्रण, हजारों की संख्या के साथ गोपाष्टमी पर्व पर गौशाला जायेगें

कोलकाताः 'त्रिमातृ शक्ति' के पावन अवसर पर लिलुआ गौशाला 'पिंजरापोल सोसायटी' में रविवार १० मई को गौ पूजा अर्चना व गौ महिमा का गुणगान भजनों द्वारा लिलुआ गौशाला कम्युनिटी हॉल में बड़े ही हर्षोल्लास से मनाया गया। मिकू सोनी व भुवनेश गोयल के भजनों से पूरा हाल गुंज उठा, विशेष कार्यक्रम में संजय कुमार सिंह क्षेत्र बाली, हावड़ा, पश्चिम बंगाल भारतीय जनता पार्टी के विधायक भी मौजूद थे। कार्यक्रम में गौभक्तों के लिए आहार की व्यवस्था थी, बस की सूविधा हावड़ा मैदान से गिरीश पार्क होते हुए गौभक्तों को लेकर लिलुआ गौशाला पहुंची, दूसरी बस काकुड़गाछी से भक्तों को लेकर लिलुआ गौशाला पहुंची। गौभक्तों ने बड़े ही प्रेम पूर्वक भक्ति भावना से हरा-भरा चारा लाकर गायों को खिलाया, कोई रोटी तो कोई लड्डू खिलाए, किसी ने गौमाता को चुनड़ी ओढाई तो किसी ने तिलक लगाया। हम सभी जानते हैं कि गाय माता में ३३ कोटि देवताओं का वास होता है, गौमाता से बढ़कर कोई सेवा नहीं, कार्यक्रम में गौभक्त कमल जी गुप्ता का भरपूर सहयोग रहा। कार्यक्रम के आयोजक 'मैं भारत हूं फाउंडेशन', श्री मैढ़ क्षत्रिय स्वर्णकार महिला समिति, अभ्युदय अन्तर्राष्ट्रीय संस्था एवं श्री श्याम परिवार बेनी माधव हावड़ा थे। जय भारत! जय गौमाता।

महेश जिनका नाम है, कैलाश जिनका धाम है,
देवों के देव महादेव को, हम सबका प्रणाम है...
महेश नवमी पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएँ

सेवा त्याग सदाचार
सर्वे भवन्तु सुखिनः

SAVE WATER
PLANT A PLANT
CREAT A FOREST
SAVE NATURE
&
MAKE THE PLANET GREEN

माहेश्वरी समाज के उत्पत्ति दिवस महेश नवमी के पावन पर्व पर आप सबको हार्दिक शुभकामनाएँ

सेवा त्याग सदाचार
सर्वे भवन्तु सुखिनः

CCS GROUP
Satish Taparia
Mob.: 9831185309
fahrenheit Taparia Roofing Systems
SILO STORAGE | SHEET METAL CUTTING | FACADE | ROOFING SOLUTIONS
CCS House - 56A, Mirza Ghalib Street,
Kolkata, West Bengal, Bharat - 700016
Web.: www.ccsgroup.co.in, www.tapariaroofings.com
भारत को 'भारत' ही बोला जाए एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

'मैं भारत हूँ फाउंडेशन' द्वारा २८ जून को धनोधान्य ऑडिटोरियम कोलकाता में भव्य आयोजन

कोलकाता:'मैं भारत हूँ फाउंडेशन' द्वारा २८ जून को धनोधान्य ऑडिटोरियम कोलकाता में भव्य आयोजन के पूर्व १ जून को सभा आयोजित कि गई जिसमें जैन समाज की ओर से चारों जैन संप्रदाय के ४० गणमान्य भाई-बहनों की उपस्थिति रही। बिजय जी, शोभा जी , निशा जी, डॉ. संगीता जी ने विभिन्न कार्यक्रम की रूपरेखा एवं व्यवस्थाओं के बारें में सभी को जानकारी दी।

बिजय जी जैन 'मैं भारत हूँ फाउंडेशन' के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कोलकाता वासियों से आग्रह किया। इस भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रम जो सम्पूर्ण मारवाड़ी समाज के साथ आयोजित होने जा रहा है। २८ जून २०२६, को सुबह ११ बजे से स्थान धनोधान्य ऑडिटोरियम, अलीपुर कोलकाता प्रवेश -कार्ड द्वारा उसमें सभी सम्प्रदाय के सधर्मी भाई-बहनों की उपस्थिति से कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु सहयोग चाहते हैं और कहा आपके शहर में इस कार्यक्रम को सफल बनाए, आपका शहर आपकी उपस्थिति अपेक्षित है। कोलकता वासियों ने सहभागिता व आयोजन की सफलता में तन–मन–धन से महत्वपूर्ण योगदान देने का वादा किया।

इस कार्यक्रम में एडवोकेट नारायण जैन, महेंद्र पाटनी, राजकुमार सेठी, शोभा सादानी, निशा लड्ढा, डॉ. संगीता जैन, सुनीता सेठिया, मंजू पाटनी, रजनी जैन, मनोज जैन, राजेंद्र कोठारी, मंजू भंडारी, अनीता जैन, बाबूलाल दुगड़, सुनील पहाड़िया, मनीष गंगवाल, सुरेन्द्र मुणोत, सरोज सिंघी, अनुपमा जैन, अंजू सेठिया, नेहा रामपुरिया, मनोज इश्शिका, सरोज भंसाली, प्रदीप सिंघी, निश्चल जी कांकरिया, रितु सिंघी, रश्मि सुराना, सात्विक जैन, ज्ञाना देवी सहित अनेक गणमान्य साधर्मी भाई-बहन उपस्थित थे।

अंत में डॉ संगीता बोहरा जैन ने सभी का आभार ज्ञापित करते हुए कहा कि हिन्दुस्तान क्लब की बैठक में सभी सधर्मी उपस्थित होकर अपने बहुमूल्य समय एवं सुझाव साझा किए और कहा आपकी सक्रिय सहभागिता, सहयोग और समर्थन ने बैठक को सफल एवं सार्थक बनाया। आपके समय, समर्पण और योगदान के लिए हम हृदय से आभारी हैं। सभी का हार्दिक धन्यवाद।

ऐतिहासिक स्थलों और आध्यात्मिक महत्व के लिए
प्रसिद्ध बुलढाणा के इतिहास प्रकाशन
पर हार्दिक शुभकामनाएं
प्रेमराज भाला
मो. ९८५०३ १२३९१
भाला ट्रेडर्स एंड कमीशन एजेंट
मार्केट यार्ड, जयस्तंभ चौक, चिखली,
बुलढाणा, महाराष्ट्र, भारत- ४४३२०१

महेश नवमी पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएँ
सर्वे भवन्तु सुखिनः
Anil N. Bangad
Mob: 9422288421
Pranit Bangad
Mob: 9823031621
BANGAD
Since 1995
AIR COOLING SOLUTIONS

BANGAD COOLERS & FURNITURES
Manufacturer of Desert Air Coolers
Deals in Central Air Cooling Systems
Deals in furniture item
Uday" Banglow, Malegaon Road, Dhule, Maharashtra, 424001
Ph.: (02562) 232444, E-mail ID :bangadcoolers@gmail.com,
Website: www.bangadcoolers.com

कृपया मुझे INDIA ना बोलें क्योंकि
मैं भारत हूँ

अशोक बाबूलाल अग्रवाल

जिला अध्यक्ष महाराष्ट्र राज्य अग्रवाल सम्मेलन, बुलढाणा
बडू निवासी-बुलढाणा प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८५०३१४९४६

अशोक जी अपनी जन्मभूमि व कर्मभूमि 'बुलढाणा' जिले के 'चिखली' तहसील की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि पहले और आज के 'चिखली' में काफी परिवर्तन और विकास हुआ है। आवागमन के साधन अच्छे हो गए, स्कूल, कॉलेज, अस्पताल की व्यवस्था पहले से बेहतर है, यहां आयुर्वैदिक कॉलेज, फार्मेसी कॉलेज, इंजीनियरिंग कॉलेज जैसे कई बड़े-बड़े शैक्षणिक संस्थान है, यहां राजस्थानी समाज के भी विद्यालय हैं, जिसमें 'बुलढाणा' शहर में सहकार विद्या मंदिर है तो 'चिखली' में गुरुकुल विद्यालय है। यहां का सामाजिक वातावरण बहुत ही उत्तम है, हर धर्म व समाज के लोग बसे हैं, लोगों में आपसी सामंजस्य अच्छा है, यहां १५० परिवार राजस्थानी है, जिनमें ४० परिवार अग्रवाल समाज के हैं, यहां महाराजा अग्रसेन रिसॉर्ट (व्यक्तिगत), अग्रसेन पत संस्था जैसी संस्थाएं कार्यरत है। आर्थिक रूप से भी यह क्षेत्र बहुत ही उत्तम है, यहां का एमआईडीसी बहुत विकसित हुआ है, ट्रेडिंग के कारोबार के साथ-साथ यहां कॉटन मिल, ऑयल मिल व अन्य कई मैन्युफैक्चरिंग प्लांट्स लगे हैं, यहां राजस्थानी समाज के अधिकतर लोग व्यापार से ही जुड़े हैं। धार्मिक दृष्टिकोण से भी क्षेत्र उत्तम है, यहां की प्रमुख देवी रेणुका माता जी है, जिनका बहुत ही प्राचीन मंदिर है और लोगों के बीच विशेष मान्यता है। बुलढाणा जिले की बात की जाए तो 'बुलढाणा शहर' में बालाजी का मंदिर रूप में बना है, बुलढाणा के समीप ही अजंता की गुफा है, जो यहां से मात्र ३० किलोमीटर की दूरी पर है, लोनार में विश्व प्रसिद्ध लोणार सरोवर है तो शेगांव में गजानन महाराज जी का प्रतिष्ठा भव्य मंदिर है। 'चिखली' में कई गौशालाएं हैं, जिसमें राजस्थानी समाज द्वारा गोरक्षण संस्थान संचालित है ट्रस्ट बना हुआ है और ४०० गायों का पालन पोषण हो रहा है, ऐसी और कई विशेषताएं हैं हमारे 'बुलढाणा' और 'चिखली' में....

गाय को 'राष्ट्रमाता' का सम्मान निश्चित रूप से मिलना चाहिए, हमारे लिए गाय माता के समान ही है, इसलिए हम उनकी पूजा भी करते हैं, इसके लिए वर्तमान में पूरे भारत में अभियान चलाया जा रहा है, हमारे क्षेत्र चिखली में भी ११००० से अधिक लोगो ने हस्ताक्षर कर तहसीलदार को ज्ञापन सौंपा है। 'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से अपने देश का एक ही नाम रहना चाहिए 'भारत' यही हमारे देश के वास्तविकता है।

अशोक जी मूलतः राजस्थान के नागौर जिले में स्थित 'बडू' के निवासी हैं। आपका परिवार कई पीढ़ियों से महाराष्ट्र में बसा हुआ है, आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा बुलढाणा के 'चिखली' में संपन्न हुई है, यहां कॉटन इंडस्ट्रीज से जुड़े हैं और स्वयं का प्राइवेट एपीएमसी मार्केट है, महाराजा अग्रसेन जी के नाम पर, साथ ही अग्रसेन रिसोर्ट का भी संचालन कर रहे हैं। सामाजिक क्षेत्र में भी विशेष रूप से सक्रिय रहते हैं। महाराष्ट्र राज्य अग्रवाल सम्मेलन बुलढाणा के जिला अध्यक्ष हैं और भी कई संस्थानों से जुड़े हैं। जय भारत! जय गौमाता!

-मैं भारत हूँ

डॉ. सुरेश मिश्रीमल छाजेड़

जनरल फिजिशियन
तिवरी निवासी-बुलढाणा प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८२२२२९३२७

सुरेश जी मूलतः राजस्थान स्थित 'तिवरी मथानिया' के निवासी हैं। आपका परिवार लगभग १३० सालों से 'बुलढाणा' में बसा हुआ है। आपका जन्म और प्रारंभिक शिक्षा 'बुलढाणा' में ही संपन्न हुई है, उच्च शिक्षा एमडी मेडिसिन नागपुर से ग्रहण की है। वर्तमान में 'बुलढाणा' में जनरल फिजिशियन के रूप में कार्यरत हैं, साथ ही कई सामाजिक संगठनों से भी जुड़े हैं, स्वयं की संस्था संचालित दिव्यांग कल्याण पुनर्वासन व छत्रपति संभाजी नगर में स्थित जैन इंटरनेशनल शैक्षणिक संस्थान का संचालन भी कर रहे हैं।

अपनी जन्मभूमि व कर्मभूमि 'बुलढाणा' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि 'बुलढाणा' लगभग २००० फीट की ऊंचाई पर स्थित है, यहां पहले का प्राकृतिक वातावरण बहुत ही सुंदर रमणीय और अनुकूल था अंग्रेजों के समय इसे हिल स्टेशन के रूप में विकसित किया गया था। शिक्षा के दृष्टिकोण से 'बुलढाणा' हमेशा से ही उत्तम हो रहा है, आज भी यहां कई विद्यालय, महाविद्यालय व अन्य बड़े-बड़े शैक्षणिक संस्थान स्थापित है। राजस्थानी ने समाज के द्वारा सहकार विद्या मंदिर विद्यालय संचालित है। आजादी के समय यहां गोलमेज परिषद में यहां के कई **शेष पृष्ठ २७ पर...**

आइये हम सभी 'जय भारत' से अपने सुधिजनों का अभिवादन करें। जय भारत!

पृष्ठ २६ से... अधिवक्ताओं ने भारी संख्या में उपस्थिति दी थी। जिला मुख्यालय होने के कारण यहां हमेशा से ही सरकारी कार्यालय की संख्या अधिक है, वर्तमान में यहां की आबादी लगभग ३ लाख के करीब है, यहां की अर्थव्यवस्था मुख्यतः सरकारी कर्मचारियों की खरीदारी व छोटे-छोटे इंडस्ट्रीज होने के कारण है। वर्तमान में 'बुलढाणा' कृषि पर आधारित है, विशेषकर सोयाबीन की फसल अधिक पैमाने पर होती हैं, साथ ही कॉटन की भी उपज अच्छी है, यहां कई जिनिंग-प्रेसिंग मिलें हैं।इंडस्ट्रियल डेवलपमेंट उतना नहीं होना पाया जितना नहीं होना चाहिए था क्योंकि यह ऊंचाई पर स्थित होने का कारण यहां रेल सुविधा भी नहीं है, यहां का नजदीकी रेलवे स्टेशन 'मलकापुर और शेगाव' है, जो एक तहसील है। शेगांव में गजानन महाराज का भव्य मंदिर बना हुआ है, तो लोनार झील यहां से कुछ किलोमीटर की ही दूरी पर स्थित है, खामगांव अपनी चांदी के लिए जाना जाता है। पर्यटन की बात की जाए तो ज्ञानगंगा अभ्यारण बुलढाणा शहर से मात्र १० किलोमीटर की दूरी पर स्थित है, अजंता की गुफा भी 'बुलढाणा' से नजदीक ही है, सिंदखेड राजा तहसील में माता जीजाबाई का जन्म स्थान है, मेहकर तहसील में सारंधर बालाजी संस्थान प्रतिष्ठान बना हुआ है। सामाजिक दृष्टिकोण से भी 'बुलढाणा' बहुत ही उत्तम है, हर समाज के लोग बसे हुए हैं, यहां श्वेताम्बर समाज के लगभग २५० परिवार बसे हैं, यहां समाज द्वारा एक देरासर और दो स्थानक बना है, महावीर जन्मकल्याणक सभी संप्रदाय द्वारा मिलकर मनाया जाता है, चिखली में वैष्णव समाज की बहुत बड़ी गौशाला है, तो नहुरा तहसील में हनुमान जी की बहुत ही ऊंची प्रतिमा स्थापित है, ऐसी कई विशेषताएं हैं हमारे 'बुलढाणा' में.....

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि भारत हमारे देश का वास्तविक और ऐतिहासिक नाम है, इसीलिए हर भाषा में अपने देश का नाम केवल 'भारत' ही रहना चाहिए। जय भारत! जय गौमाता!

-मैं भारत हूँ

अ‍ॅड. जितेंद्र उत्तमचंद कोठारी

अधिवक्ता व समाजसेवी

तिवारी निवासी-बुलढाणा प्रवासी

भ्रमणध्वनिः ९८८१५६६९९९

जितेंद्र जी अपनी जन्मभूमि 'बुलढाणा' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि पुराने समय में इस क्षेत्र का नाम 'भीलथाना' था, जिसे आज 'बुलढाणा' के नाम से संबोधित किया जाता है, एक समय में 'बुलढाणा' जिला था और तहसील 'चिखली' था। उसके बाद 'बुलढाणा' को ब्रिटिशों ने जिले का स्थान दिया, क्योंकि यह एक हिल स्टेशन के रूप में था, चारों ओर हरियाली ही हरियाली थी, हमेशा ठंड का वातावरण बना रहता था। सभी सरकारी कार्यालय यहीं पर स्थित है, पिछले कुछ दशकों में यहां बहुत बदलाव आया है और विकास हुआ है, जिसमें राजस्थानी समाज की अहम भूमिका है। यहां राजस्थानी समाज द्वारा 'बुलढाणा अर्बन कोऑपरेटिव सोसाइटी' संचालित है, जिसके तत्वाधान में कई सामाजिक कार्य किए जाते हैं और इसी के अंतर्गत गौशाला और विद्यालय भी संचालित है, इसकी स्थापना १९८५ में हुई थी। पिछले ७ सालों में यहां के आमदार संजय गायकवाड जी द्वारा बहुत ही तेजी से 'बुलढाणा' का सौंदर्यीकरण किया गया है, सुविधाएं बढ़ाई गई हैं, आवागमन के साधन अच्छे हो गए हैं, जितने भी समाज धर्म के लोग यहां बसे हैं, हर समाज के आराध्य के यहां मोमेंटो बने हुए हैं जो शायद महाराष्ट्र में अन्यत्र कहीं नहीं हो और इसका सारा श्रेय आमदार जी को ही जाता है। यहां कोर्ट की इमारत को भी १०० साल हो गए हैं, राष्ट्रपति जी भी यहां आकर गए हैं। सामाजिक दृष्टिकोण से यह क्षेत्र बहुत ही उत्तम है, हर धर्म समाज के लोग बसे हैं और लोगों के बीच सौहार्दपूर्ण भाईचारे का वातावरण है। पर्यटन की बात की जाए तो यहां विश्व प्रसिद्ध 'लोनार झील' है, तो शेगांव में गजानन महाराज का मंदिर, सिंदखेड राजा में माता जिजाऊ का जन्म स्थान है, तो यहां बालाजी का बहुत ही भव्य मंदिर बना हुआ है, मेहकर में भी शारंधर बालाजी मंदिर है, तो देवल राजा में भी बालाजी मंदिर है, जहां पर वर्ष में एक बार बालाजी महाराज को नगर परीक्षण के लिए निकल जाता है, कहते हैं कि उस समय तिरुपति के बालाजी उनसे भेंट के लिए आते हैं। यहां का अमेजॉन पार्क भी बहुत ही उत्तम है। अजंता गुफा भी यहां से मात्र ४५ किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। जैन समाज के भी यहां कई मंदिर, स्थानक और दादावाड़ी बने हैं। आर्थिक स्थिति की बात की जाए तो 'बुलढाणा' की आर्थिक स्थिति मुख्यतः लोगों पर निर्भर है, क्योंकि यह जिला मुख्यालय है, यहां सरकारी कई कार्यालय हैं, दूसरा कृषि क्षेत्र पर भी आधारित है, आसपास के क्षेत्र में कृषि बड़े पैमाने पर होता है, इंडस्ट्री बहुत कम पैमाने पर है। 'बुलढाणा' में कई गौशालाएं संचालित है, जिसमें जैन समाज द्वारा और बुलढाणा अर्बन द्वारा भी गौशाला संचालित है और भी कई विशेषताएं हैं हमारे 'बुलढाणा' में....

गाय को 'राष्ट्रमाता' का सम्मान अवश्य मिलना चाहिए गए हमारे लिए पूजनीय है और आज वैज्ञानिकों ने भी यह साबित किया है कि गायों से मिलने वाली प्रत्येक वस्तु मानव जीवन और रोगों के लिए बहुत ही उपयोगी है, इसलिए आज गौशालाओं में कई तरह के प्रकल्प चलाए जा रहे हैं, इसीलिए गायों का संरक्षण और सवर्धन जरूरी है।

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से अपने देश का एक ही नाम रहना चाहिए 'भारत' यही हमारे देश की वास्तविक पहचान है।

जितेंद्र जी मूलतः राजस्थान स्थित 'तिवारी' के निवासी हैं आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा 'बुलढाणा' में संपन्न हुई है, यहां अधिवक्ता के क्षेत्र में कार्यरत है, आप बैंकिंग, सिविल, क्रिमिनल व अन्य क्षेत्रों में सक्रिय हैं, आपके पुत्र चेतन जी भी साथ भी सक्रिय हैं। आप भारतीय जैन संगटना के जिला सदस्य हैं, अन्य कई संस्थानों से भी जुड़े हैं, बुलढाणा अर्बन कोऑपरेटिव सोसाइटी के कानूनी सलाहकार हैं। जय भारत! जय गौमाता!

-मैं भारत हूँ

भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए अभियान में क्या आप सहयोग देना चाहते हैं तो संपर्क करें-9322307908
Follow for more updates
https://www.instagram.com/mainbharathun_?
अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें
https://www.instagram.com/mainbharathun_?

हंसराज वर्मा

अध्यक्ष मैढ क्षत्रिय स्वर्णकार समाज मलकापुर

बिलाड़ा निवासी-मलकापुर प्रवासी

भ्रमणध्वनिः ९८५०७२५४०९

हंसराज जी अपनी जन्मभूमि व कर्मभूमि 'मलकापुर' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि 'मलकापुर' बुलढाणा शहर से लगभग ४० किलोमीटर दूरी पर स्थित है। पहले और आज के 'मलकापुर' में काफी परिवर्तन आया गया है, विकास हो रहा है, शिक्षा और चिकित्सा के क्षेत्र में भी कई संस्थाएं खुल गई हैं, आवागमन की दृष्टिकोण से भी यह क्षेत्र बहुत उत्तम है। यहां का सामाजिक माहौल बहुत ही अच्छा है, हर धर्म समाज के बीच सौहार्द का वातावरण है। यहां राजस्थानी समाज के लगभग ६०० परिवार निवास करते हैं, जिनमें लगभग २० परिवार मैढ़ क्षत्रिय परिवार से हैं। यहां माहेश्वरी समाज का भवन भी है, जैन समाज का भी मंदिर और भवन है। यहां के धार्मिक स्थानों की बात की जाए तो जगदंबा देवी का मंदिर, छोटी बड़ी देवी का मंदिर, गणेश जी का मंदिर व अन्य कई देवी-देवताओं के मंदिर है। कहते हैं कि यहां राजकुमारी मल्लिका का वास था, जिनके नाम से इस क्षेत्र का नाम 'मलकापुर' पड़ा। मलकापुर महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश की सीमा से लगा हुआ है। आर्थिक रूप से यह क्षेत्र बहुत ही उत्तम है, यहां एमआईडीसी है, जिसमें कई मैन्युफैक्चरिंग यूनिट्स और रॉ मटेरियल के कारोबार होते हैं, कृषि क्षेत्र भी यहां सक्रिय है, राजस्थानी समाज के अधिकतर लोग कारोबार से ही जुड़े हैं। 'बुलढाणा' जिले की बात की जाए तो शेगांव का गजानन महाराज मंदिर, लोनार तहसील लोणार सरोवर के अलावा बुलढाणा शहर में पहाड़ी पर स्थित तिरुपति बालाजी का मंदिर और भी कई धार्मिक स्थान है, जो बुलढाणा को प्रधानता प्रदान करते हैं। बुलढाणा में कई गौशालाएं भी हैं, जिसमें राजस्थानी समाज का भी योगदान रहता है, ऐसी और कई विशेषताएं हैं, हमारे 'बुलढाणा और मलकापुर' में.....

गाय को तो राष्ट्रमाता का सम्मान निश्चित रूप से मिलना चाहिए, गाय हमारे लिए पूजनीय है, उनकी सेवा और सुरक्षा जरूरी है।

भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से अपने देश का एक ही नाम रहना चाहिए 'भारत'!

हंसराज जी मूलतः राजस्थान स्थित 'बिलाड़ा' के निवासी हैं, आपका जन्म व शिक्षा बुलढाणा के 'मलकापुर' तहसील में संपन्न हुई है, यहां आप आभूषणों के कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक क्षेत्र में भी सक्रिय रहते हैं। मैढ़ क्षत्रिय स्वर्णकार समाज मलकापुर के अध्यक्ष पद पर कार्यरत हैं, यथासंभव अन्य सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। जय भारत! जय गौमाता!

-मैं भारत हूँ

सुभाष बेगानी

अध्यक्ष श्री वर्धमान स्था. जैन श्रावक संघ

किशनगढ़ निवासी-बुलढाणा प्रवासी

भ्रमणध्वनिः ८८०५३४११०३

सुभाष जी अपनी जन्मभूमि व कर्मभूमि 'बुलढाणा' के खामगांव तहसील की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि यह 'बुलढाणा' शहर से मात्र ५० किलोमीटर की दूरी पर स्थित है, यहां का सामाजिक वातावरण बहुत ही उत्तम है, यहां जैन समाज के लगभग १५० परिवार बसे हुए हैं, समाज द्वारा यहां तीन जैन मंदिर और स्थानक बना हुआ है, यहां राजस्थानी समाज द्वारा हर पर्व एक साथ मिलकर मनाया जाता है, पिछले ३० सालों में यहां बहुत ही बदलाव आया है, विशेषकर इंफ्रास्ट्रक्चर के क्षेत्र में बहुत वृद्धि हुई है। आवागमन के साधन अच्छे हो गए हैं, यहां एमआईडीसी है, जहां हिंदुस्तान लीवर और पारले जी जैसी कंपनियों के मैन्युफैक्चरिंग प्लांट्स भी लगे हुए हैं, यह विशेषकर कृषि क्षेत्र है, यहां की अनाज मंडी सबसे बड़ी मंडी है, पूरे बुलढाणा जिले में यहां विशेष का सोयाबीन, गेहूं जैसे फसलों की पैदावार अधिक होती है। राजस्थानी समाज के लोग अधिकतर व्यापार से ही जुड़े हैं, शिक्षा और चिकित्सा के क्षेत्र में भी यह क्षेत्र उत्तम है, यहां इंजीनियरिंग कॉलेज, १० डिग्री कॉलेज, आईआईटी कॉलेज, होम्योपैथिक कॉलेज, नेशनल हाई स्कूल जैसे कई शैक्षणिक संस्थान हैं। धार्मिक दृष्टिकोण से भी है क्षेत्र बहुत ही उत्तम है। शेगांव में गजानन महाराज प्रतिष्ठान है, जो पूरे भारत में प्रसिद्ध है और अपनी अनुशासन प्रिय वातावरण के लिए जाना जाता है, इसके अलावा यहां के 'गोंधनापुर' क्षेत्र में प्राचीन समय का किला है जो अभी जर्जर अवस्था में है, यहां की सबसे बड़ी मान्यता मोठी देवी की है, जहां कोजागिरी पूर्णिमा के बाद १० दोनों का भाव्य उत्सव आयोजित होता है, ऐसी कई विशेषताएं हैं हमारे 'बुलढाणा और खामगांव' में....

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से अपने देश का नाम केवल 'भारत' ही रहना चाहिए जो हमारे देश की वास्तविक पहचान है।

सुभाष जी मूलतः राजस्थान के किशनगढ़ तहसील में स्थित 'रूपमगढ़' के निवासी हैं। आपका जन्म व शिक्षा 'बुलढाणा' में संपन्न हुई है। यहां आप किरणा व अन्य कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं, श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ खामगांव के अध्यक्ष हैं। भारतीय जैन संघटना से भी जुड़े हैं। जय भारत! जय गौमाता!

-मैं भारत हूँ

आइये हम सभी 'जय भारत' से अपने सुधिजनों का अभिवादन करें। जय भारत!

ओमप्रकाश एस. शर्मा

ट्रस्टी तिरुपति बालाजी मंदिर राजूरघाट
रेणवाल निवासी-बुलढाणा प्रवासी
भ्रमणध्वनिः ९८६०३३०१५३

ओमप्रकाश जी अपनी जन्मभूमि व कर्मभूमि 'बुलढाणा' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि पहले के मुकाबले आज का 'बुलढाणा' बहुत बदल चुका है, हर क्षेत्र में विकास दिखाई देता है, लोगों के रहन-सहन का स्तर बढ़ गया है, हर तरह की सुविधा उपलब्ध है, आवागमन के साधन अच्छे हैं, यहां का सामाजिक वातावरण भी बहुत अच्छा है और धर्म समाज के लोग बसे हुए हैं। यहां राजस्थानी समाज की कई संस्थाएं कार्यरत है, जिसमें सबसे प्रमुख है 'बुलढाणा अर्बन' जिसकी वजह से ही आज 'बुलढाणा' का नाम रोशन है, 'बुलढाणा अर्बन' द्वारा कई प्रकल्प चलाए जा रहे हैं, उनके द्वारा ही यहां सहकार विद्या मंदिर और गौशालाएं भी संचालित है, जिससे यहां के विकास को बढ़ावा मिला है, बुलढाणा अर्बन के प्रमुख श्री राधेश्याम चांडक जी ने यहां के सभी राजस्थानियों को एकजूट करके रखा है, हर किसी के सहयोग के लिए तत्पर रहते हैं, ३० मार्च राजस्थान स्थापना दिवस पर सभी राजस्थानी एक मंच पर उपस्थित होते हैं और इसकी पूरी जिम्मेदारी चांडक जी उठते हैं, भाई जी के सानिध्य में रहने के कारण उनसे पिता तुल्य स्नेह और मार्गदर्शन प्राप्त होता रहा है।

अंग्रेजों के समय 'बुलढाणा' हिल स्टेशन के रूप में जाना जाता था, क्योंकि यह पहाड़ पर स्थित है और आज भी इसकी प्राकृतिक सुंदरता बनी हुई है। धार्मिक दृष्टिकोण से क्षेत्र बहुत ही उत्तम है, यहां के शेगांव तहसील में विश्व प्रसिद्ध श्री गजानन महाराज मंदिर है, जहां लोगों के रहने-ठहरने की उत्तम व्यवस्था है और एक शांत और सौहार्दपूर्ण वातावरण वाला, धार्मिक स्थल है। जहां हजारों की संख्या में लोगों का आना-जाना रहता है, इसके अलावा लोनार झील जो उल्का पिंड गिरने से निर्मित हुआ है, वह भी बुलढाणा जिले में ही स्थित है। राजूर घाट पर हाल ही में बालाजी मंदिर बना हुआ है जो तिरुपति बालाजी मंदिर का ही प्रतिरूप है, ऐसे और कई विशेषताएं हैं हमारे 'बुलढाणा' में....

गाय को 'राष्ट्रमाता' का सम्मान निश्चित रूप से मिलना चाहिए, हमारे बुलढाणा में 'बुलढाणा अर्बन' द्वारा वेद विद्यालय के प्रांगण में बहुत बड़ी गौशाला संचालित है, तो तिरुपति बालाजी मंदिर के प्रांगण में भी एक गौशालाएं संचालित है, ऐसी और कई गौशालाएं हैं बुलढाणा में। गाय हमारे लिए माता के समान ही है, उनकी सेवा और सुरक्षा जरूरी है। मेरा तो यह मानना है शहर में गौशाला खोलने के बजाय यदि गांव के प्रत्येक किसान को गायों के लालन-पालन का खर्चा दिया जाए तो वे अच्छे से गायों की सेवा कर सकेंगे, जिससे गौ माता और फलित होगी।

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से अपने देश का एक नाम एक पहचान रहना चाहिए 'भारत' यही हमारे देश के वास्तविकता है।

ओमप्रकाश जी मूलतः राजस्थान स्थित 'रेणवाल' के निवासी हैं, आपका परिवार लगभग १०० वर्षों से 'बुलढाणा' में बसा हुआ है। आपका जन्म व सम्पूर्ण शिक्षा 'बुलढाणा' में संपन्न हुई है, यहां आप बुलढाणा अर्बन के अंतर्गत इंटीरियर फर्नीचर के क्षेत्र में कार्यरत हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं, तिरुपति बालाजी मंदिर राजूरघाट के ट्रस्टी हैं, अन्य कई संस्थानों से भी जुड़े हैं। जय भारत! जय गौमाता! **-मैं भारत हूँ**

सूरज बजरंगलाल अग्रवाल

अध्यक्ष खामगांव अग्रवाल सभा
पलसाना निवासी बुलढाणा प्रवासी
भ्रमणध्वनिः ९४२२१८१८७९

सूरज जी अपनी कर्मभूमि 'बुलढाणा' जिले में स्थित 'खामगांव' तहसील की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि पहले और आज के खामगांव में बहुत अंतर आ गया है, समय के साथ विकास हुआ है, पहले यहां चारों ओर पहाड़ी होने से यहां का वातावरण ठंडा रहता था, पर आज जनसंख्या वृद्धि और इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट के कारण यहां के तापमान में बहुत वृद्धि हुई हैं, गर्मी के समय यहां का तापमान ४० से ४७ डिग्री हो जाता है। खामगांव आर्थिक रूप से बहुत ही समृद्ध है, यहां कई बड़ी-बड़ी कंपनियों के प्लांट्स लगे हैं, हिंदुस्तान लीवर के साबुन निर्माण की यहीं पर होता है, उनका प्लांट्स लगा हैं, एक समय में खामगांव एशिया लेवल में कॉटन का मार्केट था, जिनिंग-प्रेसिंग मिलें थी, जिसमें से आज कुछ बंद हो गई है यह कॉटन सीड्स का हब है,इसीलिए यहां लगभग १०० तेल मिलें हैं, साथ ही ट्रेडिंग का कारोबार भी बड़े पैमाने पर होता है। सामाजिक दृष्टिकोण से यह क्षेत्र बहुत उत्तम है, यहां राजस्थानी समाज के लगभग २००० परिवार निवास करते हैं, सबकी अपनी-अपनी सामाजिक संस्थाएं और भवन बने हैं, हर त्यौहार बड़े ही धूमधाम से मनाया जाता हैं, यहां अग्रसेन जयंती संपूर्ण अग्रवाल समाज द्वारा बड़े रूप ममनाया जाता है, छोटे-बड़े सभी वर्ग के लोग इसमें सम्मिलित होते हैं, ८ दिनों तक कई सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक कार्यक्रम होते हैं। यहां अग्रसेन भवन के साथ-साथ अग्रसेन चौक भी बना हुआ हैं,इस भवन का निर्माण १९६३ में ही हुआ था जो बुलढाणा का सबसे पहले अग्रसन भवन हैं, इसके बाद शेगांव में बना था, इसके अलावा स्थानीय निवासियों द्वारा यहां जगदंबा उत्सव बहुत ही भव्य रूप में मनाया जाता है, कोजागिरी पूर्णिमा के बाद भव्य शोभायात्रा निकलती है, जिनका मंदिर विशेष प्रसिद्ध है, यहां लकड़ी गणपति जिसे 'मान का गणपति' भी कहा जाता है, १३० साल पुराना है और ८ फुट की प्रतिमा पूरी तरह से लकड़ी की बनी हुई है, जिसका हाल ही में जिर्णोद्धार किया गाया। खामगांव में श्री श्याम बाबा का पुराना मंदिर है, जिसकी **शेष पृष्ठ ३० पर...**

भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए अभियान में क्या आप सहयोग देना चाहते हैं तो संपर्क करें-9322307908
Follow for more updates
https://www.instagram.com/mainbharathun_?
अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें
https://www.instagram.com/mainbharathun_?

पृष्ठ २९ से... स्थापना १९६७ में श्री ब्रजमोहन जी खंडेलवाल परिवार ने की थी। १६ किलोमीटर दूरी पर शेगांव में गजानन महाराज जी का बहुत ही भव्य मंदिर हैं, जिसका मैनेजमेंट बहुत ही सुचारू रूप होता है और पूरे भारत में जाना जाता है, लोणार का सरोवर, मेहकर व देउलगांव राजा का श्री बालाजी मंदिर, सिंदखेड राजा में माता जिजाऊ का जन्म स्थान है। इसके साथ ही पंचमुखी हनुमान जी का मंदिर, भगवान कार्तिकेय जी का मंदिर व अन्य कई प्रमुख देवस्थान है। 'खामगांव' में गौशाला में भी संचालित है, जिसमें राजस्थानी समाज का बहुत बड़ा योगदान है, ऐसी और कई विशेषताएं हैं हमारे 'बुलढाणा और खामगांव' में .....

गाय को राष्ट्रमाता का सम्मान निश्चित रूप से मिलना चाहिए।

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि 'भारत' हमारी प्राचीन संस्कृति और इतिहास है, यही हमारे देश की वास्तविक पहचान है इसीलिए अपने देश का नाम केवल भारत रहना चाहिए।

सूरज जी मूलतः राजस्थान सीकर जिले में स्थित 'पलसाना' के निवासी हैं, आपका परिवार लगभग चार पीढ़ियों से अकोला के 'बासी टकली' में बसा हुआ था। विगत ४० वर्षों से बुलढाणा के 'खामगांव' में बसे हैं। यहां आप सिविल इंजीनियर व के रूप में कार्यरत हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं, खामगांव अग्रवाल सभा के अध्यक्ष हैं,लायन्स क्लब संस्कृति व सर्विस में ट्रस्टी के रूप में कार्यरत हैं,अन्य कई संस्थानों से भी जुड़े हैं।

जय भारत! जय गौमाता

-मैं भारत हूँ

नवरतनमल वेदमुथा

सचिव स्थानकवासी समाज लोनार

नागौर निवासी-लोनार प्रवासी

भ्रमणध्वनि: ९४२२९४९५९१

नवरतन जी अपनी जन्मभूमि व कर्मभूमि 'बुलढाणा और लोनार' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि बुलढाणा शहर से लगभग १०० किलोमीटर की दूरी पर स्थित है, 'लोनार' तहसील अपनी विभिन्न विशेषताओं और ऐतिहासिकता समृद्धता से परिपूर्ण है, यहां की सबसे बड़ी विशेषता यहां की 'लोनार झील' है, जो एक उल्का पिंड की वजह से बना और यह झील ३ किलोमीटर लंबाई और १ किलोमीटर चौडाई में फैला हुआ है, जिसके भीतर ५२ प्रकार के लवण पाए जाते हैं, बहुत ही प्राचीन कमलजा माता का मंदिर इसके समीप है, सास बहू का कुआं, इसमें दो तरह के पानी पाए जाते हैं, एक तरफ खारा पानी तो दूसरी तरफ में मीठा पानी प्राप्त होता है, जबकि कुएं में कोई पार्टीशन नहीं है। लोनार में ही स्थित है स्वामी जी का मंदिर और यहीं पर स्थित है ब्रह्मा जी का मंदिर, जिसमें स्थापित ब्रह्मा जी की प्रतिमा बहुत ही छोटी है। यह क्षेत्र स्वतंत्रता काल से भी जुड़ा हुआ है, कहते हैं नाना फडणवीस जी द्वारा यहां आंदोलन के लिए मंत्रणा की जाती थी, ऐतिहासिकता और धर्म ग्रंथों की बात की जाए तो इस क्षेत्र पर लवणासुर का आतंक मचा हुआ था, तब भगवान विष्णु ने उसका वध किया था, इसीलिए इस क्षेत्र का नाम 'लोणार' पड़ा। यह भी कहा जाता है यहां राजा पद्मावत का राज हुआ करता था जो जैन थे, इसीलिए पद्मावती के नाम से जाना जाता है। 'लोनार' में हेमाडपंथी कई मंदिर हैं। सामाजिक दृष्टिकोण से भी 'लोनार' बहुत ही समृद्ध है, यहां हर समाज व धर्म के लोग बसे हैं, हर तीज त्यौहार बड़े ही धूमधाम और उत्साह से मनाया जाता है, लोग एक दूसरे के तीज त्योहारों में सम्मिलित होते हैं, लोगों में परस्पर सामंजस्य सौहार्दपूर्ण वातावरण है, यहां जैन समाज के लगभग १५० परिवार बसे हुए हैं, यहां जैन मंदिर उपाश्रय, २ स्थानक है, मंदिर में मुनिसुव्रत स्वामी जी तीर्थंकर की प्रतिमा स्थापित है। यहां जैन समाज द्वारा गौशाला है जो ६ एकड़ में फैली है, लगभग २०० वर्ष पुरानी है, यहां राजस्थानी समाज द्वारा महाराणा प्रताप उच्च माध्यमिक विद्यालय भी संचालित है, आर्थिक दृष्टिकोण से भी लोनार बहुत ही उत्तम है, विशेषकर कृषि पर आधारित है, ऐसी कई विशेषताएं हैं हमारे 'लोनार' में...

गाय को राष्ट्रमाता का सम्मान अवश्य मिलना चाहिए, उनकी सेवा सुरक्षा जरूरी है

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से अपने देश का नाम केवल 'भारत' ही रहना चाहिए।

नवरतन जी मूलतः राजस्थान के नागौर जिले में स्थित 'बडू' के निवासी हैं आपका परिवार कई पीढ़ीयों से 'लोनार' में बसा हुआ है, आपका जन्म शिक्षा यहीं संपन्न हुई है। १९६० में पारिवारिक परिस्थितियों के कारण आपको पढ़ाई छोड़नी पड़ी पर आपकी इच्छा शक्ति और लगन के कारण पारिवारिक जिम्मेदारियां निभाने के बाद अपने पुनः २००६ साथ में अपने स्नातक, स्नातकोत्तर जैनोलॉजी लाडनूं से किया, तत्पश्चात २०२१ में जैनोलॉजी में अपने पीएचडी के डिग्री हासिल की। आप पारिवारिक कपड़े के व्यवसाय से जुडे रहे। वर्तमान में सामाजिक क्षेत्र में सक्रिय हैं। स्थानकवासी समाज लोनार के सचिव हैं, जैन कॉन्फ्रेंस ज्ञान प्रकाश शाखा से जुड़े हुए हैं जय गौ माता! जय भारत!

-मैं भारत हूँ

भारत को 'भारत' ही बोला जाए एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

आइये हम सभी 'जय भारत' से अपने सुधिजनों का अभिवादन करें। जय भारत!

पूरणमल शर्मा

निवर्तमान जिला अध्यक्ष जांगीड़ ब्राह्मण समाज

मकराना निवासी-बुलढाणा प्रवासी

भ्रमणध्वनिः ८२७५२८४८३३

पूरणमल जी अपने कर्मभूमि 'बुलढाणा' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि ३० सालों में 'बुलढाणा' बहुत ही बदल चुका है, इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट के साथ शिक्षा और अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में भी बहुत प्रगति हुई है, यहां आज इंजीनियरिंग कॉलेज, मेडिकल कॉलेज खुल गए हैं। आवागमन के साधन अच्छे हो गए हैं, यहां राजस्थानी समाज का भी विद्या मंदिर विद्यालय संचालित है। आर्थिक स्थिति की बात की जाए तो मुख्यतः कृषि पर आधारित है। सोयाबीन व अन्य फसलों की पैदावार बड़े पैमाने पर होती है।

राजस्थानी समाज के अधिकतर लोग व्यापार से ही जुड़े हैं, यहां का सामाजिक माहौल बहुत ही शांत और सौहार्दपूर्ण है, हर धर्म समाज के लोग बसे हैं सभी समाज द्वारा हर त्यौहार बड़े ही धूमधाम से मनाया जाता है, यहां जांगीड ब्राह्मण समाज के लगभग ५० परिवार बसे हैं और पूरे जिले में ढाई सौ परिवार हैं, यहां भगवान विश्वकर्मा का मंदिर भी बना हुआ है। बुलढाणा में पर्यटन की बात की जाए तो यहां का सबसे प्रमुख पर्यटन स्थल लोणार सरोवर है यहां पर उल्कापिंड गिरा था। जो यहां से लगभग ७० किलोमीटर की दूरी पर स्थित है, महाराष्ट्र में प्रसिद्ध गजानन महाराज शेगाव में स्थित है। इसके अलावा गांव में भी कई धार्मिक स्थान हैं, जहां लोग घूमने जाना पसंद करते हैं, ऐसी और कई विशेषताएं हैं हमारे 'बुलढाणा' में...

गाय को राष्ट्रमाता का सम्मान अवश्य में मिलना चाहिए, गाय हमारे लिए माता ही है, हम उनकी पूजा करते हैं, उनकी सेवा सुरक्षा जरूरी है।

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से अपने देश का नाम एक ही रहना चाहिए 'भारत' यही हमारे देश के वास्तविक पहचान है।

पूरणमल की मूलतः राजस्थान के नागौर जिले में स्थित 'मकराना' तहसील के 'रामपुर गांव' के निवासी हैं। आपका जन्म व शिक्षा यहीं संपन्न हुई है, पिछले ३० सालों से आप 'बुलढाणा' में बसे हैं और फर्नीचर के कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही आप सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं, पूर्व में बुलढाणा जिला जांगिड़ ब्राह्मण समाज के अध्यक्ष रहे, अन्य कई सामाजिक संगठनों से भी जुड़े हैं। जय भारत! जय गौमाता!

-मैं भारत हूँ

कैलाश नथमल वर्मा

जिला अध्यक्ष बुलढाणा मैढ़ क्षत्रिय स्वर्णकार समाज

मेड़ता सिटी निवासी-बुलढाणा प्रवासी

भ्रमणध्वनिः ९४२२८८३५२६

कैलाश जी अपनी जन्मभूमि व कर्मभूमि 'बुलढाणा' के 'मलकापुर' तहसील की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि पहले के मुकाबले आज का 'मलकापुर' बहुत ही विकसित है, हर तरह की सुविधा और व्यवस्थाएं हैं, आवागमन के साधन अच्छे हैं, यह सेंट्रल रेलवे से जुड़ा होने के कारण यहां प्राय हर जगह की ट्रेन आती हैं और नेशनल हाईवे से भी जुड़ा है। यहां की अर्थव्यवस्था की बात की जाए तो यहां एमआईडीसी है, पर उतनी विकसित नहीं है, कृषि क्षेत्र भी है। यहां राजस्थानी समाज के ९०% लोग व्यापार से ही जुड़े हैं, युवा पीढ़ी नौकरी की ओर अधिक रुचि रख रही है। 'मलकापुर' का सामाजिक माहौल बहुत ही अच्छा है, हर समाज के लोग बसे हैं, यहां राजस्थानी समाज के लगभग हजार परिवार है, जिनमें मैढ़ क्षत्रिय समाज के १५ परिवार है, यहां राजस्थानी समाज द्वारा बिरला मंदिर बना हुआ है, माहेश्वरी समाज का माहेश्वरी भवन भी है। धार्मिक स्थानों की बात की जाए तो यहां गौरीशंकर जी का मंदिर, बिरला मंदिर, राम मंदिर जैसी कई प्राचीन और ऐतिहासिक मंदिर है। कहते हैं कि यहां मल्लिका रानी का निवास था, इसलिए इस क्षेत्र को 'मलकापुर' कहा जाने लगा। प्राकृतिक रूप से भी बुलढाणा और मलकापुर बहुत ही रमणीय क्षेत्र है। मलकापुर से कुछ किलोमीटर दूरी पर 'नलगंगा डैम' है जो इसकी शोभा को और बढ़ते हैं। 'बुलढाणा' जिले की बात की जाए तो लोणार तहसील में विश्व प्रसिद्ध लोणार झील है तो शेगांव तहसील में श्री गजानन मंदिर प्रतिष्ठान है, नांदुरा में १०५ फिट हनुमानजी की मुर्ति है, इसके अलावा बुलढाणा शहर में पहाड़ पर स्थित है तिरुपति बालाजी का मंदिर और भी कई प्राचीन और ऐतिहासिक स्थान है 'बुलढाणा' में। मलकापुर में गौशालाएं भी है, जिसमें राजस्थानी समाज का योगदान है, ऐसी और कई विशेषताएं हैं हमारे 'बुलढाणा और मलकापुर' में.....

गाय को 'राष्ट्रमाता' का सम्मान निश्चित रूप से मिलना चाहिए।

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि हमारे देश का तो वास्तविक नाम 'भारत' था और 'भारत' ही रहना चाहिए।

कैलाश जी मूलतः राजस्थान स्थित 'पीपाड़ सिटी' के पास 'पादूकला' गांव के निवासी हैं। आपका जन्म व शिक्षा 'मलकापुर' में संपन्न हुई है, यहां आप आभूषणों व हॉटेल के कारोबार से जुड़े हैं, आपकी ३ स्टार हॉटेल सारथी इंटरनेशनल है। आपके दो पुत्र और बहुएं सीए हैं, साथ ही सामाजिक कार्य में भी सक्रिय रहते हैं। बुलढाणा जिला मैढ़ क्षत्रिय स्वर्णकार समाज व सराफा एसोसिएशन मलकापुर के भी अध्यक्ष पद पर कार्यरत हैं, अन्य कई सामाजिक संस्थाओं से भी जुड़े हैं। जय भारत! जय गौमाता!

-मैं भारत हूँ

अनिल बांगड़

जिला सचिव माहेश्वरी महासभा धुले
पाली निवासी-धूले प्रवासी
भ्रमणध्वनिः ९४२२२८८४२१

अनिल जी 'महेश नवमी' पर्व की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि 'महेश नवमी' का पर्व माहेश्वरी समाज की उत्पत्ति का दिवस है, जिससे पूरा माहेश्वरी समाज बड़े ही उत्साह से मनाता है, इस अवसर पर समाज के सभी परिवार इकट्ठे होते हैं, विचारों का आदान-प्रदान होता है और युवाओं में भी अपने समाज की उत्पत्ति के प्रति जागृति निर्माण होती है, इसीलिए इस पर्व को मनाना बहुत जरूरी है, नई पीढ़ी में अपने संस्कार और रीति रिवाज की जानकारी हो इसीलिए ऐसे त्योहार मनाना जरूरी है।
आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म और समाज से दूर हो रही है, इसका कारण उन्हें हम अपने साथ नहीं जोड़ पा रहे, दूसरा आज की पीढ़ी शिक्षा व नौकरी के लिए अपने परिवार से दूर होती है, जिससे वह धर्म और समाज से भी नहीं जुड़ पा रहे, स्थानीय स्तरों पर होने वाले कार्यक्रमों में भी उनका जाना नहीं होता है, इसीलिए ऐसे त्यौहार के माध्यम से हम युवाओं को जोड़ सकते हैं।
आजकल समाज में प्री वेडिंग शूट व संगीत संध्या कार्यक्रमों का आयोजन होने लगा है जो एक तरह से कुरीति है, जिसके लिए माहेश्वरी समाज के वरिष्ठ ों द्वारा प्रयास भी किया जा रहा है यह कि सब बंद होना चाहिए।
आज की युवा पीढ़ी पारिवारिक व्यवसाय को छोड़ नौकरी को अधिक महत्व दे रही है, हम उन्हें कार्यक्रम के माध्यम से यह बताते हैं कि युवा पीढ़ी २०-२५ लाख का पैकेज देखी है, २४ घंटे में १२ से १८ घंटे उन्हें समय देना पड़ता है,जिससे मानसिक अशांति व शारीरिक पीड़ा जैसी कई परेशानियां होती है। यदि किसी वर्ष कंपनी में तुम्हारा परफॉर्मेंस काम होता हैं, तो कंपनियां निकाल भी देती है, इतनी मेहनत करने के बाद भी जीवन का कोई इनपुट नहीं रहता, इसके बजाय हम कुछ नया इनोवेशन कर खुद का कारोबार स्थापित करें तो हम स्वयं के साथ-साथ दूसरों को भी रोजगार उपलब्ध करा सकते हैं, इसलिए युवाओं को नौकरी के बजाय सेल्फ बिजनेस पर ज्यादा ध्यान देना चाहिए।
गाय को तो राष्ट्रमाता का सम्मान निश्चित रूप से मिलना ही चाहिए, हम उनकी पूजा करते हैं, उनकी सुरक्षा सेवा जरूरी है। गाय से मिलने वाली प्रत्येक वस्तु मानव जीवन और प्रकृति के लिए बहुत ही उपयोगी होती हैं, इसीलिए उनका लालन-पालन होना जरूरी है।
'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से अपने देश का एक ही नाम रहना चाहिए 'भारत'।
आनंद जी मूलतः राजस्थान स्थित 'पाली' जिले के निवासी हैं। आपका जन्म सम्पूर्ण शिक्षा महाराष्ट्र के 'धुले' में संपन्न हुई है यहां आप सेंट्रल एयर कूलिंग मैन्युफैक्चरिंग के कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यो में भी सक्रिय रहते हैं, जिला माहेश्वरी सभा धुले के सचिव पद पर कार्यकरत हैं, रोटरी क्लब के पूर्व अध्यक्ष हैं। जय भारत! जय गौमाता

-मैं भारत हूँ

प्रेमराज प्रभुलाल भाला

कार्यकारिणी सदस्य माहेश्वरी महासभा
गोविंदगढ़ निवासी-बुलढाणा प्रवासी
भ्रमणध्वनिः ९८५०३१२३९१

प्रेमराज अपनी जन्मभूमि व कर्मभूमि बुलढाणा के 'चिखली' तहसील की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि 'बुलढाणा में चिखली' तालुका एक प्रमुख स्थल है, जो आपने शिक्षा और औद्योगिक क्षेत्र के लिए विशेष रूप से जाना जाता है, पूरे जिले में सात बीएमएस कॉलेज हैं, श्री गजानन मंदिर प्रतिष्ठान द्वारा भी शेगांव में कॉलेज का निर्माण किया जा रहा है, साथ ही बुलढाणा शहर में सरकार द्वारा मेडिकल कॉलेज का निर्माण किया जा रहा है। आर्थिक रूप से भी 'चिखली' बहुत ही उत्तम है, विशेकर बैंकिंग के साथ यहां कई व्यापार है, चिखली एमआईडीसी में मैन्यूफैक्चरिंग और कई वेयरहाउस है, चिखली की अनाज मंडी भी बहुत बड़ी है। अपने राजस्थानी समाज के लोग मुख्यतः कारोबार से ही जुड़े हैं, शेगांव का गजानन महाराज इसकी अपनी विशेष पहचान है, जो पूरे भारत में सबसे उत्तम मैनेजमेंट के लिए जाना जाता है। चिखली में भी रेणुका माता जी का भव्य मंदिर है। सामाजिक दृष्टिकोण से यह क्षेत्र बहुत ही उत्तम है, हर धर्म समाज के लोग बसे हैं, यहां राजस्थानी समाज के ४५० परिवार है, जिनमें ९० परिवार माहेश्वरी समाज के हैं, यहां माहेश्वरी समाज द्वारा कई सामाजिक व धार्मिक क्रियाकलाप किए जाते हैं, लोगों के बीच आपसी तालमेल बहुत ही अच्छा है। यहां कई गौशालाएं भी संचालित है जिसमें राजस्थानी समाज का पूरा-पूरा योगदान है, ऐसी और कहीं विशेषताएं हैं, हमारे 'बुलढाणा और चिखली' में......
'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से अपने देश का एक ही नाम रहना चाहिए 'भारत'!
प्रेमराज जी मूलतः राजस्थान के 'जयपुर' जिले में स्थित 'गोविंदगढ़' के निवासी हैं। आपका जन्म व शिक्षा बुलढाणा के 'चिखली' में ही संपन्न हुई है, यहां कारोबार से जुड़े हुए हैं, साथ ही स्वयं द्वारा संचालित आदर्श मेडिकल कॉलेज के सचिव पद पर कार्यरत है, अखिल भारतीय माहेश्वरी महासभा के कार्यकारिणी सदस्य हैं, तपोवन देवी संस्थान रोहड़ा व आदर्श क्रीड़ा मंडल चिखली के अध्यक्ष, विद्या भारती पश्चिम क्षेत्र भारत के **शेष पृष्ठ ३३ पर...**

पृष्ठ ३२ से... उपाध्यक्ष, शिक्षण प्रसारण मंडल चिखली, महेश सेवा समिति चिखली, परमहंस मौनीबाबा संस्थान चिखली के सचिव, अखिल भारतीय माहेश्वरी महासभा के राष्ट्रीय सदस्य, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ चिखली के पूर्व नगर संचालक, श्री राम मंदिर बालाजी संस्थान चिखली के सदस्य जैसी कई संस्थानों से जुड़े हैं। सहकारिता के क्षेत्र में आपका योगदान अत्यंत उल्लेखनीय है, श्री अंबिका अर्बन मल्टी स्टेट कोऑपरेटिव क्रेडिट सोसाइटी के संस्थापक अध्यक्ष के रूप में ग्रामीण एवं मध्यवर्गीय परिवारों के आर्थिक सशक्तिकरण हेतु महत्वपूर्ण कार्य किया।

आप विनम्र सहज और लोगों के प्रति समर्पित रहे, इसके बावजूद कभी प्रसिद्ध की चाह नहीं रखी, जिम्मेदारियां को चुना।

आपके पुत्र प्रतीक जी भी आपके पद चिन्हों पर चलते हुए राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय स्तर पर शिक्षा व अन्य क्षेत्र में कई उपलब्धि प्राप्त की है। प्रतीक जी की साहित्य सृजन की पहली पुस्तक शब्दों का सफरनामा (५० स्वयं रचित कविताओं का संग्रह) आतंक उल्लेखनीय संग्रह है। जय भारत! जय गौमाता!

-मैं भारत हूँ

तेरापंथी सभा की कमान पुनः सुशीला पुगलिया के हाथो में

श्रीडूंगरगढ़ः श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा के सत्र २०२६-२०२८ के अध्यक्ष पद पर सुशीला पुगलिया निर्विरोध निर्वाचित हुई हैं। तेरापंथ भवन, धोलिया नोहरा में आयोजित आमसभा में मुख्य चुनाव अधिकारी निर्मल कुमार बागा ने उनके निर्वाचन की आधिकारिक घोषणा की।

अध्यक्ष पद के लिए कुल पांच नामांकन प्राप्त हुए थे। इनमें सुशीला पुगलिया, सुमति पारख, छतरसिंह , प्रदीप पुगलिया और संजय पुगलिया शामिल थे। नामांकन प्रक्रिया के दौरान सुमति पारख ने गुरु इंगित को शिरोधार्य करते हुए अपना नाम वापस ले लिया। इसके बाद छत्तरसिंह बोथरा, प्रदीप पुगलिया और संजय पुगलिया ने भी वरिष्ठजनों की समझाइश और आपसी सहमति से अपने नामांकन वापस ले लिया। २७ मई तक चारों प्रत्याशियों के नामांकन वापस हो जाने से सुशीला पुगलिया एकमात्र उम्मीदवार रह गई थीं। आमसभा में सहायक चुनाव अधिकारी कांति कुमार पुगलिया ने सदन को इसकी जानकारी दी, जिसके बाद मुख्य चुनाव अधिकारी ने उन्हें निर्विरोध अध्यक्ष घोषित कर दिया। गौरतलब है कि सुशीला/सीता पुगलिया का निरन्तर यह दूसरा कार्यकाल है और दोनों ही बार निर्विरोध निर्वाचित हुई है।

नव निर्वाचित सुशीला पुगलिया ने आचार्य महाश्रमण को वंदन करते हुए पूरे समाज का आभार जताया और संघ व संघपति की सेवा में स्वंय को नियोजित करते हुए संस्था व समाज के विकास में स्वंय को सदैव प्रस्तुत रखने की बात कही।

इससे पूर्व आम सदन में मंत्री प्रदीप पुगलिया ने मंत्री प्रतिवेदन का वाचन किया। गत बैठक का वाचन किया गया और हिसाब सदन में रखा गया, इसके बाद आगे निर्वाचन की कार्यवाही के लिए मुख्य चुनाव अधिकारी की कार्यभार सौंपा गया।

घोषणा होते ही सभा में उपस्थित सदस्यों ने ॐ अर्हम' की मंगलध्वनि के साथ उनका स्वागत किया और बधाई दी। इस अवसर पर समाज के अनेक गणमान्य नागरिक मौजूद रहे।। मुख्य निर्वाचन अधिकारी निर्मल डागा ने सुशीला/सीता पुगलिया को सौंपां नियुक्ति पत्र। श्रावक वरिष्ठ पत्रकार राजू हीरावत ने बताया कि कोलकाता सहित समाज की संस्थाओं की ओर से भी अध्यक्ष बनने पर हार्दिक बधाई दी है। आशा व्यक्त कि आपके कार्य काल में समाज हित में और भी काम होगे और नये आयाम स्थापित होंगे। उल्लेखनीय है कि सुशीला, सीता पुगलिया भामाशाह, राजस्थान गौरव भीकमचंद पुगलिया की धर्मपत्नी है।

मारवाड़ी समाज का संगठन समय की मांग-दिलीप लखोटिया, अध्यक्ष माहेश्वरी सभा

सिलीगुड़ीः 'मैं भारत हूं फाउंडेशन' (भारत सरकार से पंजीकृत संस्थान) व पश्चिम बंगाल की द्वितीय आर्थिक राजधानी 'सिलीगुड़ी' के साथ सभी पर्वतीय क्षेत्र दार्जिलिंग, कालिमपोंग, सोनादा, करसियांग, लोपचु बाजार, अलीपुरद्वार, कूचबिहार आदि आदि क्षेत्रों में पीढियों से निवासित मारवाड़ी परिवार अपनी संस्कृति के प्रचार-प्रसार के लिए १३ सितंबर २०२६ को 'भारतीय सांस्कृतिक समागम' कार्यक्रम का आयोजन करने जा रहा है। १२ मई २०२६ को 'सिलीगुड़ी' में स्थापित तेरापंथ भवन में हुई एक बैठक में 'मैं भारत हूं फाउंडेशन' की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष मंजू अग्रवाल के नेतृत्व में दिलीप लखोटिया अध्यक्ष माहेश्वरी सभा, राजेश कुमार अग्रवाल अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन, कैलाश जैन दिगंबर जैन समाज, अंकुर जैन दिगंबर जैन समाज, गौतम कुमार जैन दिगंबर जैन समाज, कन्हैयालाल गोयल मारवाड़ी मेवाड़ मंडल, महेंद्र डागा जैन श्वेतांबर ट्रस्ट, किशन लाल आंचलिया जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, सुरेंद्र छाजेड़ उत्तर बंगाल आंचलिक सभा, नीलम झवर अध्यक्ष माहेश्वरी महिला मंडल आदि आदि ने अपनी उपस्थिति दिखाकर सफलतम निर्णय लिया कि आयोजित कार्यक्रम में सभी मारवाड़ी समाज का समर्थन-सहयोग-मार्गदर्शन के साथ उपस्थिति भी मिलेगी। जल्द ही 'मैं भारत हूं फाउंडेशन' के राष्ट्रीय पदाधिकारीयों के साथ जूम व अन्य विधाओं के साथ संपर्क किया जाएगा ताकि १३ सितंबर २०२६ को 'सिलीगुड़ी' में आयोजित कार्यक्रम में समस्त मारवाड़ी समाज के वीर और वीरांगनाओं की उपस्थिति के साथ सहयोग भी मिले। जय भारत!

-मैं भारत हूँ

भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए अभियान में क्या आप सहयोग देना चाहते हैं तो संपर्क करें-9322307908

Follow for more updates
https://www.instagram.com/mainbharathun_?
अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें
https://www.instagram.com/mainbharathun_?

With Best Compliments

GURU RAJENDRA METALLOYS INDIA PVT LTD

G R METALLOYS PVT LTD

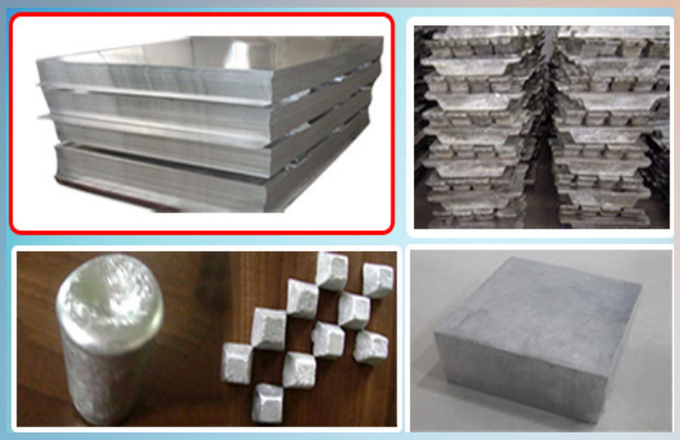

SHAH BABULAL DHANRAJJI JAIN

JAYANT BABULAL JAIN

SHAILESH BABULAL JAIN

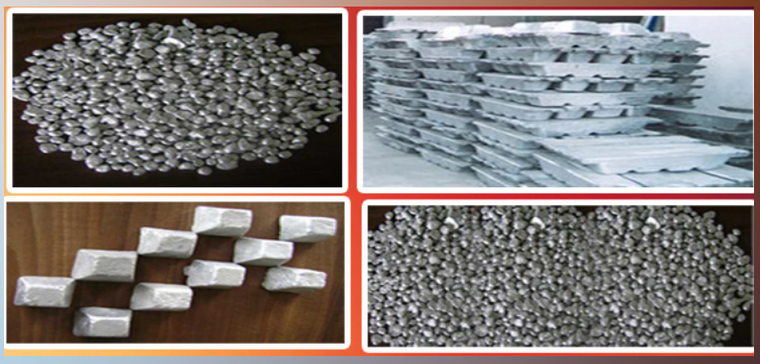

Manufactures of Aluminium Alloy Ingot, Aluminium Ingot, Aluminium Notch bar, Aluminium Shots, Aluminium Cubes

8, Gautam Vihar Society, Opp. Sukhsagar Complex, Aroma School Road, Ashram Road, Usmanpura, Ahmedabad, Gujarat , Bharat– 380 013.

सम्पादक-विजय कुमार जैन

जिनागम

धर्म-परिवार-समाज-व्यवसाय का समन्वय

समस्त जैन समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका

हम सब जैन हैं

विशेष छूट
विज्ञापन देने पर
पूरे साल
पत्रिका मुफ्त

जैन समाज एकत्र हो यह है हमारा नारा
इसके लिए चाहिए मात्र आप ही का सहारा

वार्षिक शुल्क
२१००/-

मात्र रु. १५०/- में, प्रति महिना

पंजीकृत कार्यालय

गेलॉर्ड पब्लिकेशन्स प्रा.लि.

बी-२१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत -४०० ०५९

दूरध्वनि: ०२२-४०१५ ८०९४ अणुडाक: mailgaylordgroup@gmail.com अन्तरताना : www.jinagam.co.in

परस्परोपग्रहो जीवानाम

Postal Registration Number - MCN/294/2024-2026
WPP License No. MR/Tech/WPP-354/North/2024-26
Published on 19th May 2026 & Posting on 20th of Every Month
Posted at Marol Bazar Post Office, Mumbai - 400 059.

भारत को 'भारत' ही बोलें इंडिया नहीं

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा

१७ वें वर्ष में प्रवेश

मैं भारत हूँ

भारतीय सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनैतिक, ऐतिहासिक भावना को प्रेरित करती पत्रिका

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

अभी तक भारत के शहरों के इतिहास बताते हुए प्रकाशित विशेषांक...

विशेष छूट
विज्ञापन प्रकाशन करने पर
पूरे साल
मैं भारत हूँ
पत्रिका मुफ्त

भारत का इतिहास पहुँचाए आपके हाथ

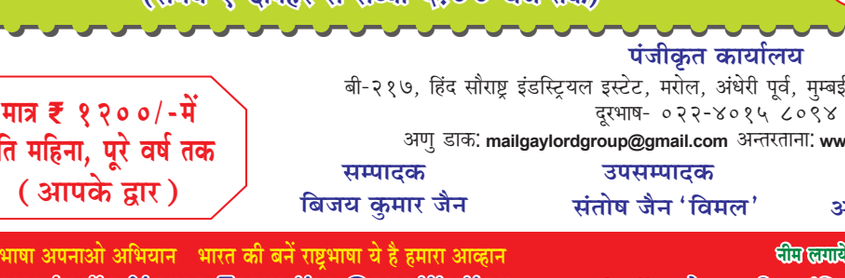

आप चाहें तो प्रस्तुत विशेषांक
आपके घर-कार्यालय की
शोभा व ज्ञान बढ़ाने के लिए मंगवा सकते हैं

आपके हाथों में

विशेषांक मंगवाने के लिए संपर्क करें
(समय १ दोपहर से संध्या ५.०० बजे तक)

ज्योति
9820873689

मात्र ₹ १२००/-में
प्रति महिना, पूरे वर्ष तक
(आपके द्वार)

पंजीकृत कार्यालय
बी-२१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत -४०० ०५९.
दूरभाष- ०२२-४०१५ ८०९४
अणु डाक: mailgaylordgroup@gmail.com अन्तरताना: www.mainbharathun.co.in

सम्पादक
बिजय कुमार जैन

उपसम्पादक
संतोष जैन 'विमल'

कार्यकारी सम्पादक
अनुपमा शर्मा (दाधीच)

भारतीय भाषा अपनाओ अभियान भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान
Remove India Name From the Constitution

नीम लगायें पर्यावरण बचाये
India को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए

गेलार्ड पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड व संपादक, मुद्रक व प्रकाशक बिजय कुमार जैन, बी-217, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत-400 059 से मुद्रित करवा कर बी-२१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत- 400 059 से प्रकाशित किया गया, टेलीफैक्स-०२२-४०१५८०९४, अणुडाक-mailgaylordgroup@gmail.com, अन्तरताना - www.mainbharathun.co.in,
द्वारा विनय ग्राफिक्स, युनिट नं 13, रवी इन्ड. को.-ऑप. सोसाइटी लि., 25 महल इन्ड ईस्टेट, महाकाली केव्ह्ज रोड, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत-400093 से मुद्रित करवाकर प्रकाशित किया गया।
RNI No. MAHHIN/2010/48574